

Vol. II
No. 6



Wednesday,
25th August, 1951.

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

	PAGES
L. A. Bill No. XVIII of 1954, the Hyderabad Abolition of Inams Bill, 1954—First reading not concluded.	271-819

*Note :—** At the commencement of the Speech denotes confirmation not received.

—

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Wednesday, the 25th August 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock.

[Mr. Speaker in the Chair]
(Questions & Answers)

See Part I

L. A. Bill No. XVIII of 1954, the Hyderabad Abolition of Inams Bill, 1954

श्री. रामगोपाल नावंदर (कन्दड) :—कठ से जिनामास विल पर चर्चा हो रही है। तमाम अरकान कल मे अवतक अपने विचार अस बार मे पेश किये हैं। अस विल मे ओक कलांज बहुत अहम है, या कम से कम मे तो असको अहम समझना है। हमारे हुकूमत ने जो अन्वनि का काम अस थोड़े से अरमे मे किया है, अुसका महत्व है। यह विल अमकी ओक आखरी कड़ी है, जो हमारे मामने है।

अस विल की अहमियत असलिये बढ़ जाती है कि यह हमारे मावेसा पास किये हुओ लैंड रिफास्म विल का ओक भाग ही है। अमे लोग जो गरीब किनामों को लूटते थे, जिन्हे जिनात दार कहा जाना था, अन्हें खतम करने के लिये यह विल लाया गया है। असलिये असकी अहमियत बढ़ जाती है। अस विल को यहां पेश करने से गो कुछ नमय लग गया, ओक बार दो बार ड्राफ्टीग की गयी और अब यह ब्रैंड अन स्टार्ट किया गया है। मुक्कीन है आप अससे भी सौ फ्लिंद मुतफिक न हों। असको बेहतर मे बेहतर बनाने की कोशिश की गयी और मे कहुंगा कि अब भी कोओ बेहतर मजेशन्म (Suggestions) पेश किये जायें नो अन्हें कवूल कर के विल को ज्यादा मे ज्यादा प्रोग्रेसिव्ह (Progressive) बनाना चाहिये। यह कहा जाता है कि हुकूमत जागीरदारों और सरमायेदारों की वॉकिंग (Backing) करती है। कल ही ओक ऑनरेबल मेंबर ने कहा कि हुकूमत अमे विल के जरिये लोगों मे अपने से नफरत पैदा कर रही है और अससे लोगों मे कोप्रेस से नाराजगी पैदा हो रही है। मे असके बजाहत की जरूरत नहीं समझना कि यह ओनराज कहां तक असलियत रखता है। लेकिन अस हुकूमत की आला कारनामों मे यह ओक विल भी है, और असके लिये मे ऑनरेबल मिनिस्टर और हुकूमत को मुबारकबाद देता हूं।

अस विल को देखने मे चंद चीजें मामने आयी। अस विल का मकसद सास तौर पर यह है कि बड़े बड़े जमीनदारों और जिनामादारों के कबजे मे जो जमीनात हैं, जिनपर वे खुद काश्त नहीं करते, और मुनाफा खाते हैं, अस कानून के जरिये अनके बैमे जिनामों को अबॉलिश (Abolish) किया जाय। तकरीबन पंचरा लाख बेकड़ पर असे जिनामात हैं जिन्हे साबेका हुकूमत ने दिया था, और कोप्रेस पार्टी ने पावर मे जाने के बाद बुसको कब तक बारो रखा। बब जिन्हे अबॉलिश किया जा रहा है। अस विल को दो जागों मे तकसीम किया जाया है। बेकड़ वह जो खिलाह के हैं, वह दूसरे लोकिन के हैं, और दूसरे बहु हैं जो धार्मिक संस्थाओं को और देहात मे काम करते हैं और अन्य कर्मसूली जीव बहुत जानते हैं, जूहे खिलाह के हैं। जिन्हे अल्पदिवा रख कर कम्मन जानी तरीके

से बनाया जा सकता है, और ऐसी कोशिश कर रहे हैं। मैं अमीद करता हूँ कि विन किसका कानून भी असेवकी के मामले आ जायेगा। यह कहना कि हमारी हीं कोशिशों से यह कानून आया है, दुर्भाग्य नहीं हो सकता। दुर्भाग्य तभाय चीजों पर मोंच विचार करते हुए जिन चीजों को खनन कर सकते हैं, करनी जा रही है। अब जो कानून आया है, अगर वह आधा है तो आधा बाद में आ जायेगा। कानून में जो चाहे रख देता तो आमत इे लेकिन अम पर अमल करना मुश्किल है। यह कहा जाता है कि वंदेयों में ऐसा है, मद्रास में ऐसा है, लेकिन यह कहते हुए जिन प्राणों के हालात को नहीं देखते। वेश्वक वहां जो अच्छी चीजें हैं, अनुहृत यहां लाया जायेगा। लेकिन हमारे पास जो मशीनरी है, जो हालात हैं, वह ऐसे हैं कि ज्यादा से ज्यादा डिके (Delay) करने की कोशिश की जाती है। यहां चंद अनासिर ऐसे हैं, जो रोकना चाहते हैं। हमारे पास डेमोक्रेटी (Democracy) पर अमल किया जाता है, लेकिन जो भी कानून बनते हैं अनुकूलों का मायाव बनाने में रुकावटें पैदा की जाती हैं। श्रिविठ में पांच छः कठाजेर हैं। वहुन मी बातें तो डेफीनिशन (Definition) से ही जाहिर हो जाती हैं। अन्यत्र यह बताया गया है कि विनामदार अन्ये नाम पर जो विनामी जनोन रखते हैं, अनुहृत ही के लिया जायेगा। असकी समझ में कुछ गलतफहमी हो गयी है। यह समझना कि असके कानूनकारों को तुलना दी गया, यह ठीक नहीं है। दुर्भाग्य का मकसद यह है कि असके ज्यादा से ज्यादा लोगों को फ़ंपडा पढ़वे और विनामदारों को कम से कम तुलना पढ़वे, और असके हालत में समाज की व्यवस्था कामगारी के साथ चलती रहे। अगर डेफीनिशन की ड्रफ्टिंग में कुछ गड़ी महसूस की जाएं तो मैं निस्टर सहृदय से दरखास्त करूँगा कि वे अनुहृत अमेंड (Amend) कर लें, और विन तरह खानियों को दूर करते में हररी हुरूपत कभी पीछे नहीं रहेगी। असका द्वारा जुग्ज यह है कि जो विनामी जनोन ले लिये जाएंगे वह गवर्नरेट में व्हेस्ट होंगे असके बाद डिस्ट्रीब्यूशन (Distribution) के मीके पर अनामदार का भी लिहाज रखा जा कर अुपको साड़े बार गुना तक अस शर्त पर दिया जायेगा कि अुपके पास दूनरी जमीन न हो, या वह अुपके पट्टे की आराजी है, तो अुपको भी असमें शामिल किया जायेगा। असके बाद तीन चार किसम के लोग हैं। परमनंद टेन्ट, सूर किष्ट टेन्ट, टेनररी टेन्ट असमें यह जमीन अके बाद दीगरे तकसीम की जाएगी। अित तरह अित कानून के जरिये सब के हुरूक मलहूज रहेंगे। शोडे से मावीजे के साथ जमीनात दी जायेंगी क्योंकि कान्स्टीट्यूशन के तहत तो माविजा देना ही पड़ता है। असलिये कानूनकार को कुछ नामिनल प्राप्तिस (Nominal price) बदा करना होगा। कानून अतियात के तहत भी हमें हुरूक को मलहूज रखना है। असलिये अस लिहाज से मावीजे का आयटम आता है। मुमकिन है अव्वामे के बहुत से लोग असको न मानें, लेकिन हालात के लिहाज से यह लाजमी है। यह कहना कि असके कानूनकारों पर अन्याय होगा, दुरुस्त नहीं है। अिमकानी तौर पर कम से कम करने की कोशिश की गयी है। असको लैंड रेवीन्यू पर रखते से भी सहज होगी। अस बिल में सब से अच्छी चीज न्याय मंडल है, जो डिस्ट्रिक्ट जज के लेवल पर कायम किया गया है। अनुहृत यह महसूस हो कि अुपके हुरूक मुतासिर हो रहे हैं, तो अनुहृत अस न्याय मंडल के साथ अनोल करने का अविकार रहेगा। अित तरह न्याय का दरवाजा खुला रहता है और कलेक्टर को भी पावर्स दिये गये हैं। वह भी छानबीन कर के मलटीपल्स (Multiples) के लिहाज से माविजे का ताबथुन करेंगे। मैं समझता हूँ कि हाजूस के जॉनरेबल मैचर्च

* شری کے - انت رینڈی (بانکنٹہ) :- فرست رینڈنگ کے تعلق سے سائزہ ست بھی
تک نسکشن جی رکھا جائے اور سازش سات بھی منسٹر صاحب اپنا جواب دن تو مناسب
ہو گا۔ کم سکنڈ رینڈنگ لیجا سکتی ہے۔

سٹر اسپیکر:- پریکٹیکل ٹوں پر آپکو امنڈمنٹ لانا ہے تو سکنڈ رینڈنگ کے وقق پر
لاسکتے ہیں۔

شری عبدالرحمن (ملک پیٹھ) :- فرست رینڈنگ کے موقع پر ہمیں حکومت سے موقع
ہے کہ مباحث کے پیش نظر کچھ چیزیں وہ قبول کر لیں گی۔
شری وی۔ بی۔ راجو (سکندر آباد - عام) :- آج کو ہوا دن فرست رینڈنگ کی بحث
کے لئے رکھا جائے اور اس پر ووٹ لیا جائے، بعدکار ۵۰٪ مٹ پر منسٹر صاحب جواب
دے سکے ہیں۔

سٹر اسپیکر:- منسٹر صاحب یہ بھی جواب دینگے۔ انکے جواب کے بعد موشن
فار فرست رینڈنگ ووٹ کے لئے رکھا جائیگا۔

مینیسٹر فار فاینانس (شی. وی. کے. کونٹکر) :- سات بجے تک جنرل ڈسکاؤنٹ
ہو گا۔ سات بجے اونٹرےول مینیسٹر ساہب جواب دے گے اور آج ہی فائدہ رہنگا ستمہ ہو گی۔

Mr. Speaker : Discussion will continue till 7.00 p.m.

* شری ایل۔ این - رینڈی (ورڈنایٹھ) :- سٹر اسپیکر سر۔ انعام اپالیشن بل جو
ہمارے سامنے پیش ہوا ہے اوسکے متعلق ہماری یہ توقع تھی کہ چلا بل جو واپس ہوا
ہے اوسکو واپس لینے کے بعد اسکو نہایت جامع طور پر کشتکاروں کے حقوق کا لحاظ کرنے
ہوئے مکمل طور پر پیش کیا جائیگا ایکن ہم جب اس بل کو دیکھتے ہیں تو ہم محسوس
کرنے ہیں کہ ہماری توقعات پوی نہیں ہوتیں۔

[Shri Anna Rao Ganamukhi (Chairman) in the Chair]

تم بتایا جاتا ہے کہ ہمارے اشیٹ میں ۱۰ لاکھ ایکٹر اراضیات انعامی ہیں۔ ان میں
سائزہ تین لاکھ ایکٹر سے کچھ زیادہ دیول اور خیراتی انعامات وغیرہ سے متعلق

ہیں۔ بیونہدار نیڑی وغیرہ کی اراضیت کسقسر ہیں سکے عدد نہیں بتنے کئے ہیں۔ اندازہ کیا گیا ہے کہ یہ بن جن اراضیت سے سمعنی ہوتے و لائے و بچنے لاکھاً ایکو اراضی ہے۔ مابقی اراضیات سے یہ بن لا گو نہیں ہوڈ۔ گوناً تم حصہ راضیات بر یہ بن لا گو ہوگا اور تم حصہ اراضیات انعامی اس سے چھوٹ جائیں گے۔ یہ چیز کسی معقولیت پر مبنی نہیں ہے یہ ہمرا خیال ہے۔ کیونکہ دعویٰ ہے کہ جتنا ہے کہ ہم زمینداری کے پرانے آثار کو ختم کر رہے ہیں اور پرنس سامر ج کی بڑی چیزوں کو متاثر ہے ہیں اور یہ کہا جا رہا ہے کہ اس بل کے ذریعہ انعامداری ختم ہو گی لیکن ہم یہ دیکھتے ہیں کہ اراضیات بر کاشت کرنے والوں کو کب حقوق دئے گئے ہیں اور چھوٹے چھوٹے انعامداروں مثلاً نیڑی سیت سندھی وغیرہ جنکی محنت کی روزمرہ لوٹ کھسوٹ ہوئے ہے اوسکو کس حد تک دو کیا گیا ہے تو ہم اس بارے میں سایوس ہوئے ہیں۔ اس میں بلوتہ دار۔ سیت سندھی۔ نیڑی وغیرہ کو مستثنی کیا گیا ہے۔ میں مور آف دی بن سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ ان لوگوں کو اس میں کیوں شامل نہیں کیا گیا؟ ان لوگوں سے بھی یہگری کا کام غلاموں کی طرح لیا جاتا ہے حالتکہ کنسٹی ٹیوینس کے تحت بھی یہگری لینا صحیح نہیں ہے۔ اسکے باوجود بھی یہگری کا رواج دیہا توں سے کیوں نہیں مٹ رہا ہے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ شہپرتوں میں کامدار لوگ بھی کرنے سے انکار کرتے ہیں تو عہدہداران سرکاری کرتے ہیں کہ اگر بھی یہگری نہ کریں گے تو انکے اراضیات انعامی ضبط کئے جائیں گے۔ آپکا ہمرا یہ فرض ہے کہ ہم اسکا انسداد کریں تاکہ ان غریب فاقہ کش لوگوں سے بھی یہگری نہ لی جائیا کرے۔ بھی یہگری کے رواج کو جڑ سے اکھیڑ پھینکنا ہارا فریضہ ہے۔ اسکے لئے ضروری ہے کہ انکے انعامات کو پتھر میں متبدل کر دیا جائے۔ تاویکہ ایسا نہ کیا جائے دیہات سے بھی یہگری کا رواج منٹے والا نہیں ہے۔ اگر انکو مستثنی رکھا گیا تو اسکا مطلب یہ عوّد کہ آج بھی دیہات میں بھی یہگری کے رواج کو آپ باقی رکھنا چاہتے ہیں۔ کئی مرتبہ اسمبلی میں اسکے متعلق سوالات کئے گئے۔ منسٹریں کے پاس رپریزنسٹیشن (Re- presentations) کئے گئے۔ اسکے جواب میں وہ زبانی ہمدردیاں تو کرتے ہیں وہ دوروں کے موقعوں پر یہ کہتے ہیں کہ بھی یہگری نہ لیجایا کرے لیکن یہگری کا مسلسلہ آج بھی جاری ہے۔ غریب کامدار بھی یہگری سے انکار کریں تو ان پر طرح طرح سے دباؤ ڈالا جاتا ہے۔ ان پر مقدمات قائم کئے جانے ہیں۔ اس طرح انکو ہمیور کیا جاتا ہے۔ اسلئے بھی یہگری کو روکنے کا مصمم ارادہ کرنے کی ضرورت ہے اور اسکے لئے ضروری ہے کہ بلوتہ انعام۔ خدمتی انعام نیڑی انعام وغیرہ ختم کئے جائیں اور ان اراضیات انعامی کا ان لوگوں کے نام پٹھ کر دیا جائے۔ ان چھوٹے انعامداروں کا دیہات میں یہ پر زور مطالبہ ہے کہ ان سے بھی وغیرہ نہ لیجایا کرے اور انکے اراضیات انعامی کا انکر نام پٹھ کر دیا جائے۔ لیکن اس بل میں انکو مستثنی کیا گیا ہے۔ حکومت کا پہ خیال ہے کہ اگر انکے انعامات لے لیں تو انکو تنخواہیں وغیرہ دینا پڑیکا جس سے خزانے پر مزید بار پڑیکا۔ میں مانتا ہوں کہ بار ہوگا لیکن جب

آپ جو گیرنے والوں کو سکرپٹوں روپیہ معاوضہ دیتے ہیں - لاکھوں روپیہ انعامداروں کو معاوضہ دیتے ہیں اور سکو خزانہ پر پار نہیں تھوڑے کرتے تو پھر ان غربیوں کو تنخواہیں منزرا کرتے کیوں پر سمجھا جزا ہے - میں اسکی تائید نہیں کرسکتا - میں سمجھتا ہوں کہ حکومت کے خزانے پر زیادہ باز نہیں ہوگا - ذمہات میں نیز ہی وسیت سندھی کو توب کیا معاوضہ دیتے ہیں ؟ تین روپیہ یا چار سارے ہزار روپیہ دیتے ہیں - ان سب نصف تعداد بتوہداروں کی ہے - ان اراضیات کا شے کر دیں تو بتوہداروں سے زر مالگزاری وصول کر سکتے ہیں - انکو نوکریاں دینا ضروری نہیں ہے - اب تہ سیت سندھی اور نیز ہی کونو کوئی دینا - پڑیگا - صرف انکی تنخواہوں کا باز پڑیگا - اسٹری میں حکومت سے اور خاص طور پر مسح کریں - اسی پر تقریباً ۱۹۰۰ اع سے بیٹھی یکاری کے خلاف جدوجہد کرنے ہیں اور ہم یہ چاہتے ہیں کہ یہ یکاری کی سری کو بینا سے اکھیڑا بھینکیں - اس اٹھ اسکو اس بل کے تحت لائیں جو منصب ہوگا - اس ضریح ہری جدوجہد کا شہر مل جائیگا - دیول اور معاشہائے خیراتی کو بھی مستثنے کیا گیا ہے - انکو بھی اس بل میں شامل نہیں کیا گیا ہے - جو اعداد تائیں گھنے ہیں اون سے معنوں ہوا کہ سائز ہے تین لاکھ ایکٹر سے زیادہ رقمہ دیول اور مذہبی اداروں کے تحت ہے - ہمارا یہ مقصد نہیں ہے کہ ان اداروں کی مدد نہ کیجائے یا بوجا یاٹ نہ ہو۔ ہم اسکے خلاف نہیں ہیں - لیکن ان اراضیات پر کشت کرنے والوں کی کیا درگت ہو گی؟ حکومت اس بارے میں کیا سوچ رہی ہے؟ ان خیراتی اداروں کو یعنی ایکٹ سے بھی مستثنے کیا گیا ہے - اور اس قانون سے نہیں مستثنی کیا گیا ہے - حکومت کی کیا روایات ہیں انکی جانب کریں تو معلوم ہوگا - اوقاف کی بڑی بڑی جائدادیں ہیں انکے تعلق ہے یہ طریقہ اختیار کیا جا رہا ہے کہ موقفہ جائداد وغیرہ کے انتظام اور کاروبار کی انجام دہی کے نام سے غریب کائنات کو زمینات سے یادخواہ کیا جا رہا ہے اور ان زمینات کو ہرچار کر کے جن کی بولی سب سے زیادہ رقم کی آتی ہے انکو کاشت کیلئے دیجارتی ہیں - خصوصاً تین چار سال سے یہ مسئلہ اہم ہو گیا ہے - نظام کے زمانے میں اس قسم کا عمل نہیں ہوا - کئی قابضین اراضی ایسے ہیں جو دیول وغیرہ کے تحت اراضیات کی ڈبل مالگزاری دے رہے ہیں - انکو آمنی کے بڑھانے کے حملے سے یادخواہ کرنے کی کوشش کی گئی ہے اور کیجارتی ہے - جب وہ زائد منافع نہ دینا چاہیں تو انہیں یادخواہ کرنے کی کوشش کیجاتی ہے - قولداری کا بل جب پیش ہوا تو اسیلی میں اس جانب توجہ دلاتی گئی کہ دیول کی اراضیات کو بھی قولداری قانون سے متعلق کیا جائے - اوس وقت یہ جواب ملا کہ اسوقت اس بارے میں اصرار کا موقع نہیں ہے - ہم انعام اہالیشن ایکٹ لارہے ہیں اوس وقت اس بارے میں غور و بحث ہو سکتی ہے - ہم بڑی توقع سے دیکھ رہے تھے کہ سائز ہے تین لاکھ ایکٹر سے زیادہ رقمہ پر کشت کرنے والوں کے بارے میں اس بل میں کیا فیصلہ کیا جاتا ہے - لیکن ہم دیکھ رہے ہیں کہ انکو اوسی ہو زیشن میں وکھا گیا ہے - نہ انعام اہالیشن ایکٹ اون سے متصل کیا گیا اور نہ ہی قولداری کا قانون - وہ غریب جو سالمہ سال سے کاشت کرتے

آرٹ ہیں اون سے زیادہ متنازع حاصل کرنے کیلئے یہ تدابیر اختیار کئے جائیں ہیں
ایسا معوم ہوتا ہے -

یہ انتہائی مذموم طریقہ ہے - حکومت کو چاہیئے کہ یا تو اس بل کے تحت اون
اراضیات کو لا یا جائے ورنہ اون کے حقوق قوانین کے متعلق جیسا کہ دوسرے نیشن کو
بروٹیکشن Protection (دیا گیا ان کو بھی برولیکشن دیا جائے - وہاں
تو فیرنٹ (Fair rent) اور انتہائی رنٹ وغیرہ مقرر کیا گیا تھا - اور زمینات سے
یہاں کرنے کے متعلق قواعد بنائے گئے تھے - یہاں پر ویسا نہیں - اس واسطے ہم
جبور ہیں کہ جو اگریپشن (Exemption) اس بل کے تحت دیا گیا ہے اوس کی
خلافت کریں - یہ سوال ہو سکتا ہے کہ اگر دبولوں سے متعلق کیا جائے تو کیا ہوگا : میں
یہ کہوں گا کہ حکومت اون کو گرانٹ دے سکتی ہے - حکومت کو کمپنیشن
(Compensation) میں سے جو روپیہ ملیے گا اوس میں سے کچھ نہ کچھ سالانہ
مقرر کر سکتی ہے - اگر کم پڑے تو اپنے خزانہ سے حکومت دے سکتی ہے - مگر ان دبولوں
کا خرچ آپ اون غربیوں پر کیوں ڈال رہے ہیں - اتنی ہی بھگتی ہے تو پبلک کے خزانہ
سے پسہ دیا جائے - لیکن اون غربیوں کو لوٹنے کی ہمت افزائی مت کیجئے یہ کہا
گیا ہے کہ اس بل میں نامیں معاوضہ دیا جا رہا ہے - اور حکومت انعامداروں سے زمینات
لیکر بالراست دوسروں کو دیگی - لیکن کس قیمت پر دیگی - آپ یہ قیمت یا وہ
معاوضہ کس کے مفاد کی خاطر مقرر کشے ہیں - یہ کاشتکاروں کے مفاد کے لئے مقرر کشے
ہیں یا اون انعامداروں کے مفاد کی خاطر جو سالہا سال سے کاشتکاروں کو لوٹ رہے ہیں ؟
آپ تو اس نقطہ نظر سے معاوضہ مقرر کشے ہیں کہ انعامداروں کو منصفانہ معاوضہ ملے -
انعامدار خود جو دوسروں سے معاوضہ لے رہے ہیں وہ کونسا معاوضہ لے رہے ہیں اون
کے مقرر کردہ معاوضہ اور آپ کے مقرر کردہ معاوضہ پر غور کریں تو فرق معلوم ہوگا اور
یہ پتہ لگے کہ آپ کا ہی مقرر کردہ معاوضہ زیادہ ہے - میں اس سلسلہ میں دو تین
باتیں عرض کروں گا - ونپری سستان کے راجہ صاحب نے اپنی کچھ زمینات فروخت کی ہیں -
جهان تک مجھے معلومات ہوئی ہیں اون سے پتہ چلتا ہے کہ چار گونا یا دس گونا مالکزاری
کی قیمت پر انہوں نے اپنی اراضیات فروخت کی ہیں - اس کے مقابلہ میں تو آپ کاشتکاروں کو
لوٹ رہے ہیں - انعامدار جو لوگوں کو لوٹا کرتا تھا وہ تو چار گونا یا دس گونا
معاوضہ پر اراضی فروخت کر رہا ہے اور آپ کی گورنمنٹ جو ہاپور گورنمنٹ ہے وہ بعض
سے لیکر سائیہ گونا معاوضہ مقرر کر رہی ہے گدوال میں چودہ ہزار ایکر سیری کی زمینات
ہیں وہاں کے اسیت والی یعنی چاہ رہے ہیں اور لوگوں کو جبیوں کرو رہے ہیں کہ دس سال
کی زر مالکزاری دیکر زمین خرید لیں لیکن اکثر لوگ وہاں زمین نہیں لے رہے ہیں -
دوسرے سستان کے مقابلہ میں آپ گدوال میں جا کر دیکھیئے - وہاں دس پندرہ پرست
سے زیادہ لوگ زمین نہیں خرید رہے ہیں - اس کے مقابلہ میں ونپری سستان میں سنت پرست
زمین فروخت ہو گئی ہے - کولہاپور میں بھی یارہ ہزار ایکر زمین ہے - وہاں اس اراضی کا
دشت حصہ دعا یا ک حق میں فروخت کیا گیا ہے - جہاں تک مجھے معلومات ہیں گدوال

या अनेको जर्मीनी दोन नीन प्रकारच्या आहेत. पहिला प्रकार म्हणजे ज्या लोकांनी स्वावेळी मरकारला मदत केली किंवा अनेक कार्य केले. ज्यामुळे मरकारला मदत काली असा कामाच्या मोबदल्यांन त्यांना दिली गेलेली असेहे, दुसरा प्रकार म्हणजे धार्मिक कृत्यासाठी दिली नेणेळी अनामे आणि निर्भया प्रहारांन असते त्रिनांन रेतांन की, जों जनतेच्या दृष्टीने किंवा जनतेच्या सेवेच्या मोबदल्यांन दिली गेली असतील.

अनेक अनेकांमध्ये आवाज निघत आहे व नीं नावडनोब नष्ट करावी असी मतगंगी करण्यांत येत आहे. परन्तु आजजच्या विचारमध्ये ग्रामसेवेच्या मोबदल्यांन दिलेली अनामे आणि धार्मिक कृत्यांकित दिली नेणेळी अनाम यांच्या वावत विचार केला गेला नाही आणि ते बरोबरच आहे, कांगडीही गोप्त ऋषी: आणि हठ हठ कैल्याने जास्त मजबूत होणे म्हणून अनामे क्रमगः नाहीमी करणे आवश्यक आहे. पण अशी जी अनामे आहेत की ज्यामुळे जनतेला कांही अुपयोग होत नाही नीं मात्र अंगोदर खाल्सा केली पाहिजेत.

पूर्वीच्या काळीं अशीं पद्धत होतीं की कोणत्याही कामाचा मोबदला पैशाच्या स्वरूपांत न देना त्या करितां कांही जर्मीनीचा भाग अनाम म्हणून त्या कार्याच्या मोबदल्यांन देष्यात येत असे. बुद्धाहराणार्थ जसें अंखाचा मंदिराच्या स्वर्चकिरितां दिले गेलेले अशीं अनामे आजच्या कायद्यात कायदम डेवली आहेत, आणि ते थोड्या फार प्रमाणांन रास्तपण आहे. या बाबत आपणास विचारच करावाच्या जाला तर आपण हेच पाहूऱ शकूं कीं अनाम ज्या कायदकिरितां दिले गेले होते तें कायद बरोबर होत आहे किंवा नाही, तसेच त्या कायदकिरिना होणारे बुत्पन्न कमी वाहे किंवा जास्त वाहे त्या करिनां वेगळ्याचा कायदाची आवश्यकता आहे. त्या करिना यांतच कांहीं तरी केले पाहिजे अशी घारी करणे अुपयोगाचे नाहीं व अशा अनामाबद्दल कांहीं केले नाही म्हणून विरास होण्याचेहि कारण नाहीं.

आतां दुभन्या प्रकारचीं जीं अनामे आहेत व जीं नष्ट करण्याकरितां हा कायदा आपणांत समाव वाहे, स्पॉकर सर, त्या नामतोत सम्माननीय सभासदांची दोन प्रकारची विचारसंघी

दुसरे असें की या कायद्यामध्ये “कायम कुळ” म्हणून नवीनच नांवाचा अुल्लेख केला गेला आहे. कुळ कायद्यामध्ये अमा अुल्लेख नाहीं. “कायम कुळ, काबीजे कदीम” या शब्दाची व्याख्या पाहिजे तशी स्पष्ट गेली गली नाहीं. तशी व्याख्या देणे आवश्यक आहे. कायम कुळ हा अमा शेतकरी वर्ग असावा की जो जमीन अिनाम देण्यापूर्वीहि त्या जमीनीचा पट्टेदार असावा, व नंतर हथा जमीनी अिनाम म्हणून दिल्या गेल्यानंतरहि तो त्या जमीनीवर काबीज असावा. जमीन अिनाम दिल्यामुळे फरक येवढाच झाला असावा कीं तो पूर्वी शेतसारा सरकारला देत असें त्या बैवज्ञो आता अिनामदाराला देत असावा. कारण जमीन अिनाम देतांना ती जमीन कोणाच्या तांब्यांत आहे किंवा काय याचा विचार केला जात नसे. अशी जर परिस्थिती कायम कुळाची बसेल तर कायम कुळाचाबत निराळा विचार करणे आवश्यक आहे. कलम ६ मध्ये अशी तरतुद केली गेली आहे की कायम कुळालाहि सान्याच्या पंचवीस पट भोवदला चाचा लागेल, ज्याचा कांही हिस्सा अिनामदाराला मिळेल. हे जे कायम कुळ आहेत त्यांच्या जमीनी दुसन्याला सरकारकडून अिनाम दिल्या जेल्यामुळे पट्टेदारासून दुरावले होते पण वास्तवीक पाहता तें त्या जमीनीचे पूर्वी-पासूनचे पट्टेदार आहेत. म्हणून अिनाम खालसा करतांना अशा कायम कुळांचा सरळ संबंध

मरकार द्वारा अद्यतन वाचा द निर्वाचन कोर्टच्या मोबदला देखाचा अट घेत्या नव्हे. तर उक्तच्या अन्यथा द्वारा असेही संकलन वाचाने.

तर नव्हीन कुठाळा मत्त्याच्या चाळेस पट आणि असंगविन कुछतळा मत्त्याच्या मात्रमध्ये मंवदला द्यावा लागेल असी अट या कावद्यात आहे आणि विनर जमांनी वाबन कलम वाचा अनुकरण द सध्ये अन्यत्राच्या मरकारावर मोबदला देखाची तरतुद आहे. हयमुळे विड्याच्या वाबनीनी वाटाऱ्ये निर्माण होतील आणि निपकारण भानगडी निर्माण होतील असे मला वाटने. म्हणून हया कावद्यात निरनिराळ्या मुद्धारणा करणे आवश्यक आहे. आमावद्यनच्या वक्तव्यांनी मासिनच्या प्रमाणेहि कांही मुद्धारणा होणे आवश्यक वाटने. आवश्यक असा वन्याच मुद्धारणा मरकार स्वीकारील असी मला खात्री आहे. माझी मरकाराला या वाबनीत असी विनरिं आहे कोंया कावद्यावर ज्या दोन्ही वाजूने ज्या मुद्धारणा येतील त्यावर सरकारने योग्य विचार करावा.

हा कायदा अमलात येण्याविषयी निश्चिनपणा दिसून येत नाही. कांही कलम अंकदम अमलात येणार आहेत तर कांही वेळेवेळी गेंडेटमध्ये प्रभिद्ध केल्याप्रमाणे अमलात येणार आहेत. यामुळे वेळेवेळी निर्माण होण्याचा मंभव आहे आणि हा कायदा तर शक्य नितक्या लौकर अमलात येणे आवश्यक आहे. म्हणून अडचणी टाळायासाठी हा कायदा अंकदम अमलात येतील असा प्रकारची मुद्धारणा या कायद्यात होणे मला आवश्यक वाटते.

मला ज्या कांहीं मुद्धारणा मुचवावयाच्या होत्या त्या मी सभागृहापुढे मांडल्या आहेत. त्यावर मभागृह व मरकार योग्य तो विचार करतोल असी आशा बाळगून मी आपले भाषण पूरे करतो.

*
 شری شرن گورہ نعمدار (الدولہ) - جیورئی : - اسپیکر سر - میں اس بن کے بارے میں اپنے خیالات ظاہر کرنے سے پہنچ ایک چیز عرض کرنا چھتا ہوں - اب تک اس بارے میں بہت سی بانیں کسی جاگہی ہیں - آج حیدرآباد میں عوامی حکومت ہے - ہم دیکھتے ہیں کہ حکومت نے جاگیرداری - زمینداری اور انعامی سسٹم کے بارے میں جو بھی قانون پیش کیا ان میں جاگیرداروں - زمینداروں اور انعامداروں کا ہی خیال رکھتا گیا - دراصل ہمیں یہ بات اپنے سامنے رکھتا ہے کہ ایک شخص کے ہاس کس طرح ضرورت سے زیادہ زمین ہوئی ہے اور اس کی وجہ سے دوسرا شخص کس طرح زمین سے محروم رہتا ہے - اور اس شخص کی محنت سے زمیندار محنت کشی بغیر کس طرح فائدہ حاصل کرتا ہے - اور اس عمل کی وجہ سے اس محنت کش شخص کی زندگی پر کیا اثر پہنچتا ہے - ہم نے پرادھتنا () اور سوتھرنا () سوتھرنا کی جو لڑائی لڑی و اس لئے نبی تھی کہ حکومت ایک ہاتھ سے دوسرے ہاتھ میں آجائے - ممکن ہے کہ کچھ لوگوں کا یہ مقصود ہو - لیکن عوام نے سوتھرنا کے لئے جو لڑائی لڑی - جو قربانیاں دیں وہ اس لئے تھی کہ فیوڈل الیمنش (Feudal Elements) اور متمول طبقہ کس طرح غریب محنت کشون کو اکسپلائیٹ (Exploit) کرتا ہے - اس کا انسداد کیا جائے اور اس طرح انسانیت کی بھلانی ہو - اور پھر ہمیں یہ دیکھنا

ہے کہ ان جاگیرداروں راجاؤں - نوابوں نے ہم زی آزادی کی جمو جبکہ میں کہاں تک حصہ نہیں - پہکہ وہ تو اپنی وقت کی حکومت کے بغیر بچھے اور حمل میں ملائے ورنے نہیں اور انہی کی ناپاک کوئی نسوانہ کی وجہ سے عوام کی بیٹھانی نہ ہو سکی - یہی لوگ منتکش عوام کے دستن اور ری اکشنری سوزس (Reactionary Sources) کے ہزاری تعداد کو کسی نہ کسی ضریب سے کچھ بچھے ورنے رہے۔ آج ہزاری حکومت ان کے ائمہ معاوضہ دینے کا پندوست کر رہی ہے - میں خود بھی انہما دار ہوں - میرے پاپ دادا کو سندھی گئی تھی - میں نے یہ معلوم کرنے کی کوشش کی کہ آخر انہوں نے منسک کی کیا بھلائی کی تھی - ایکن مجھے اسی کوئی بات معلوم نہ ہو سکی - پہکہ یہی کہ انہوں نے جاگیرداروں، راجاؤں اور مہاراجاؤں کے دربار میں خدا مدد کی تھی - ابھی صورت میں ان سے انعام و اپس اپس وقت معاوضہ دینے کی تجویز رکھنا میری سمجھو میں نہیں آمد اور پھر یہ معاوضہ کہاں سے دیا جائے گا - کس خزانہ سے دیا جائیگا - میں عوام کے خزانہ سے عوام کی منتکش کا جمع کیا ہوا یہ عوام سے وصول کئی ہوئے نیکس میں سے ہی تو انہیں دیا جائے گا اس طرح اپسے لوگ جنہوں نے آزادی کے حصول میں رکاوٹیں بیدا کیں آج آزادی حاصل ہونے کے بعد بھی انہیں آزاد حکومت آرام دہ زندگی بسر کرنے کیلئے عوام سے نیکس وصول کر کے انہیں معاوضہ دے رہی ہے۔ یہ کہا جاتا ہے کہ کنسٹی ٹیوشن کے تحت ہمیں معاوضہ دینا پڑیگا تو مجھے یہی کہنا پڑتا ہے کہ انہیں معاوضہ دینا کوئی واجبی بات نہیں ہے - ہم یہ کہہ سکتے ہیں - اور پھر آپ کہاں تک معاوضہ دینے رہیں گے -

آپ نے جاگیرداروں کو معاوضہ دیا اب انعامداروں کو دیرے ہیں - وطنداری کا بل آئیگا تو انہیں بھی دینگے - پہلی بٹواریوں کو دینگے - اس طرح آپ معاوضہ رکھتے جائیں گے - یہ کہاں تک واجبی ہے - اس سے عوام کا کتنا نقصان ہو رہا ہے - جب انعام اپالیشن بل ہاؤس میں پیش ہوا تھا تو آتریبل چیف منسٹر نے کہا تھا کہ اس بل سے جو ۲۰۲۲ لاکھ روپیے کی بچت ہو گئی ہم اسکو نیشنل ولفر پر خرچ کریں گے - لیکن اسکے ماتھے ہی یہ معاوضہ کا بل آئیگا - وہ پیسہ ادھر چلا جائیگا - جب بہت دنوں سے یہ بل پیش نہیں ہوا تھا تو ہم یہ سمجھ رہے تھے کہ حکومت شائد اسکو بہتر صورت میں پیش کریں گی - اتنی دیر تو ہو ہی گئی - اب معلوم ہوا ہے کہ حکومت کانسٹی ٹیوشن میں کچھ اس طرح تبدیل کرنے کے بارے میں سچ رہی ہے کہ عوام کے فائدے کے لئے بلا معاوضہ کوئی چیز حاصل کی جاسکتی ہے - جب ایسی چیز آئنے والی ہے تو کیوں نہ اس قانون کو مزید دو چار سوپنے روک لیا جائے تاکہ اس کے بعد ہی ہم بلا معاوضہ ان انعامی اراضیات کو حاصل کرسکیں - اس سے زیادہ فائدہ ہو گا -

[Smt. Masooma Begum (Chairman) in the Chair]

ایک اور بات یہ ہے کہ ٹینسی ایکٹ میں ہم دیکھتے ہیں کہ زینداروں کو خود کاشت کرنے کے لئے ۳ فیملی ہولڈنگ زمین چھوڑی جا رہی ہے - لیکن یہاں سائز چار گنا انعامداروں کے لئے کیوں چھوڑ جا رہا ہے؟ آخر یہ تفرقہ کس بنانا ہو رکھا گیا ہے؟

سے ہے آئیں قویہ رونگ کے حقوق کو نقصان نہیں پہنچے گا جو ان زمینات سے بھیت قولدار کیفیت فرمادے ہے تباہ ہیں اس سرہمیں سوچدے ہے۔ کتنی آنریں ممبرس اس پارے میں سے خداوت پر کرجکرے ہیں۔ لیکن حکومت ان پاتوں پر قضاً سوچے کے لئے تیار نہیں رہتی۔ جب بے منگ کی جاتی ہے تو محض بحث کے لئے یہ کہدا جاتا ہے کہ اس میں کتوں ارتھ اور اپنے اپنے ہیں جو تم چھترے ہیں وہی کرتے ہیں۔ تو میں سمجھتے ہوں کہ یہ بھی خلط فہمی سرہمی ہوگا۔ اس میں کہنا گیا ہے کہ زمانے کے بعد اپنے اندھے اپالیشن میں لا رہے ہیں لیکن میں سمجھتا ہوں کہ زمانے کے نجات سے ہمیں یک قدم اور آگئے پڑھانا چاہتے۔ چھوٹے کشکاروں کو زیادہ سے زیادہ فائدہ پہنچ سکرے اس نیسی کے تحت ہمیں غور کرنا چاہتے۔ میں امید کرتا ہوں کہ آنریں مور اس پر سوچتے گے اور جو استدیش بھی عوامی نقطہ نظر سے اور قولداروں کی یددخی کو روکنے کے سلسلے میں آئینے گے اون پر غور کر کے اپنے اچھے کو اپریشن کا اظہار کریں گے اس امید کے ساتھ میں اپنی تعریر ختم کرتا ہوں۔

* شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (پڈامنگل) :- مسٹر اسپیکر۔ دو دن سے ہاؤز میں اس بل پر مباحثت ہو رہے ہیں۔ میں زیادہ وقت لینا نہیں چاہتا۔ دراصل اراضیات انعامی کی چاہتے ہیں میں اسیت کی ہوں یا کسی اور جگہ کی ایک لمحی داستان ہے۔ انعامات جو عطیہ سلطانی کھلائی جاتے ہیں اونکی ایک لمبی کہانی ہے کہ کم سطح اراضیات انعامی کا سلسہ جاری ہوا کب منتخب اجرا ہوتے۔ تحقیقات انعامی کے وقت کم سطح حقوق کا استحکام کیا گیا اسپر ہم کوئی دھیان دینا نہیں چاہتے لیکن جو حالات ہیں اونکے سوال کو حل کیا جائے۔ حکومت نے اس مسئلہ کو حل کرنے کے لئے چند تدبیر اختیار کئے ہیں۔ چنانچہ ہمارے اسیت میں صرف خاص کو ختم کیا گیا۔ اسکے بعد جاگیرات کو ختم کیا گیا اور اسکے بعد بہ داروں کے پارے میں قانون لگانداری نافذ کیا گیا اور اسکے بعد کی چوتھی کڑی یہ ہے۔ اس منشاء کا اظہار کیا گیا ہے کہ اراضیات انعامی بغیر کسی معاوضہ کے غیر مشروط طور پر حاصل کر لئے جائیں۔ یہ صحیح نہیں ہے۔ اس مقصد کے تحت ایک قانون سے ۱۹۵۲ع میں نافذ کیا گیا تھا جس میں فی روپیہ ۲ آنے لئے جا رہے تھے۔ لیکن اوس قانون سے ضروریات پورے نہ ہونے سے یہ قانون بنایا گیا ہے۔ بعض ہمارے دوست اسکو نگھیلوں (Negatively) دیکھتا یا کوئی کنٹرکٹیو (Constructive) سوچتا ہے اسے نہیں چاہتے۔ میں ہاؤز کے سامنے کہنا چاہتا ہوں کہ اس قانون سے یقیناً بڑے لینڈ لارڈ یا بڑے انعامدار کو کوئی سہولت نہیں ہے۔ اسکے رو سے انعامداری کو برخاست کیا جا رہا ہے۔ البتہ اس میں چند مستثنیات رکھی گئی ہیں۔ چھوٹے انعامدار مثلاً بلوٹہ دار۔ سرویس انعام۔ سیت سندھی۔ نیڑی وغیرہ جو ہیں انکے انعام مجال رکھتے ہیں۔ کہا گیا ہے کہ یہی یکاری کا سلسہ انعامات ختم کر دی تو یہی ختم ہو جائیگی۔ یہ بالکل غلط فہمی ہر سبی ہے۔ یہ بلوٹہ داریاں یا سرویس انعام نیڑیوں یا

(Positively) دیکھتا یا کوئی کنٹرکٹیو (Constructive) سوچتا ہے اسے نہیں چاہتے۔ میں ہاؤز کے سامنے کہنا چاہتا ہوں کہ اس قانون سے یقیناً بڑے لینڈ لارڈ یا بڑے انعامدار کو کوئی سہولت نہیں ہے۔ اسکے رو سے انعامداری کو برخاست کیا جا رہا ہے۔ البتہ اس میں چند مستثنیات رکھی گئی ہیں۔ چھوٹے انعامدار مثلاً بلوٹہ دار۔ سرویس انعام۔ سیت سندھی۔ نیڑی وغیرہ جو ہیں انکے انعام مجال رکھتے ہیں۔ کہا گیا ہے کہ یہی یکاری کا سلسہ انعامات ختم کر دی تو یہی ختم ہو جائیگی۔ یہ بالکل غلط فہمی ہر سبی ہے۔ یہ بلوٹہ داریاں یا سرویس انعام نیڑیوں یا

سیت سندھیوں کو جو دیا گیا ہے وہ بھی یگری کے نئے نہیں دیا گیا ہے۔ جو نوگ اس خصوصی میں مبتلا ہیں وہ سہرپانی کرکے ذرا دون گشیت وغیرہ کو شیکھیں جنکی روزتے یہ اراضیات دیکھی ہیں۔

شری کے۔ ایل۔ نوسمہ راؤ (یمندو۔ عام) :- قواعد میں تو ہے لیکن عملہ کیا ہو رہا ہے ؟

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ :- میں عرض کروں گہ کہ یہ صحیح نہیں ہے چونکہ اراضیات انعامی دئے گئے ہیں اسٹئے بھی یگری نیجاتی ہے۔ دراصل ان اندامات کے دینے کی وجہ یہ تھی کہ کسی گاؤں کو بسانے کے لئے وہاں کے انتظامات اور وہاں کے کروڑاں کو مقامی لوگوں کے تفہیض کرنے کے لئے اور تحریص پیدا کرنے کے لئے بد اراضیات بطور اعتماد دئے گئے ہیں۔ ان اراضیات کے دینے کی مقصد یہ نہیں ہے کہ بھی یگری کا وہ معاوضہ ہیں۔ بھی یگری کے طریقے کو جب تک ہم دوسرے طریقوں سے ختم کرنے کی کوشش نہ کریں یہ ختم ہونے والا نہیں ہے۔

چیریٹیبل انسٹیوشنز (Charitable Institutions) کے بارے میں میں کہونگا کہ چیری ٹیبل انسی ٹیوشن کو مصالحتاً رکھا گیا ہے۔ انعامی اراضیات پبلک پرپریز (Public Purpose) کے لئے دئے گئے ہیں۔ مثلاً کسی مدرسہ یا دھرم شالہ کے لئے دئے گئے ہیں جن سے بلا لحاظ مذہب و ملت استفادہ کیا جاسکتا ہے۔ اگر ان اغراض کے ائے کوئی اراضی انعام شخص کی جائے تو اس سے کسی کا کیا نقصان ہے۔ اس میں تک نہیں کہ گورنمنٹ کا نقصان ہے لیکن گورنمنٹ نے اسیٹ کے حالات کے پیش نظر ان اراضیات کا محاصل معاون کر دیا ہے۔ ان اراضیات بر قانون تکناداری کا اطلاق نہیں ہوتا۔ تمام اس قسم کے انسٹیوشنز کے انتظام کے لئے کمیٹیاں مقرر کی گئی ہیں۔ پیغاریوں پر کوئی ذمہ داری نہیں ہے۔ وہ صرف نگرانی کرتے ہیں۔ ایسی صورت میں وہاں کے انتظامات میں اگر کوئی تقاضہ ہوں تو اونکو اور طور پر دور کیا جاسکتا ہے۔ لیکن اس قانون کو جس نقطہ نظر سے لایا گیا ہے اوس سے گورنمنٹ کو یا کسی شخص کو نقصان نہیں ہے۔

دوسرا اعتراض کمپنیشن سے متعلق کیا گیا ہے اس نارے میں کئی مرتبہ مباحثہ ہوئے ہیں اور یہ بتایا گیا ہے کہ یہ ایک کانسٹی ٹیوشنل (Constitutional) مسئلہ ہے۔ ممکن ہے کہ آئندہ کانسٹی ٹیوشن میں ترمیم کی جائے لیکن یہ کہنا قبل از وقت ہے۔ موجودہ حالات کے اعتبار سے ہمیں کانسٹی ٹیوشن پر چنان ضروری ہے۔ ہم کانسٹی ٹیوشن کے کسی پروپریزن کے خلاف نہیں جاسکتے۔ کانسٹی ٹیوشن کے لحاظ سے ہم کسی کی جائیداد کو بغیر معاوضہ دئے حاصل نہیں کرسکتے۔ ہمیں کانسٹی ٹیوشن کی تبدیلی کا اختیار نہیں ہے بلکہ یہ کانسٹی ٹیوشن اسیلی (پارلیمنٹ) کا کام ہے۔ اسٹئے معاوضہ دینا ضروری ہے اور یہ چیز اپوزیشن کے آنریل مبعس کو بھی تسلیم کرنا ہڑیکا کہ کانسٹی ٹیوشن کے لحاظ سے معاوضہ دینا ضروری ہے۔ اب رہا یہ امر کہ کیا معاوضہ دینا چاہئے۔ اسکے

متعق ہے کہ گئی ہے کہ کوڑت سک تعيين کریں گی۔ سپریک کوڑت کے نظر بھی سے تعین وسی سوجود ہیں کہ جو معاوضہ دب جائے وہ ریزن ایبس (Reasonable value) کے لحاظ سے دید چاہئے۔ اگر واجبی معاوضہ مشخص نہ کی جائے اور وہ نوگ عدالت میں رجوع ہوں تو ویسی صورت میں ریزن ایبس معاوضہ دید بڑیگ۔ اسٹری ماہرین قانون نے معاوضہ کو جو تعین کیے ہے وہ منصب سمجھنا گیا ہے۔ اس سے معوہ ہوگا کہ

شری شری گروہ۔ انعامداری۔ کمپنیشن اسکی جان ہے۔ اسکی بنیاد ہے۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ:- جو جان ہے جو بنیاد ہے وہ کانسٹی ٹیوشن کے تحت دینا ضروری ہے۔ ہم اس بارے میں آزاد نہیں ہیں کہ بغیر معاوضہ کے کسی کی جانداد نہیں۔ اگر اپساکریں تو عدالت سے اپسے احکام منسون ہو جائیں گے۔ نتیجہ یہ ہوگا کہ کاشتکاروں کو جو فائدہ پہنچا ہے وہ بھی نہ پہنچ سکے گا۔ ہمکو اس بارے میں تھہرے دل سے غور کرنا چاہئے۔ کانسٹی ٹیوشن اور نظائر کے بچش خفر ہمیں قانون بنتا بڑیگ۔ اگر بھرے فاضل دوست نظائر کے حوالہ سے یہ بات ثابت کر دیں کہ کمپنیشن دینے کا جو پروپرٹی ہے وہ صحیح نہیں ہے یا زیادہ ہے تو میں اسکو ماننے کے لئے تیار ہوں۔ البتہ کمپنیشن کے شخص کو جو ضریقہ آمدنی پر رکھا گیا ہے وہ ثبیک نہیں ہے۔ میں آنریبل منستر (مورو آف دی بل) سے عرض کرون گا کہ کمپنیشن کے شخص کے ضریقے کو تبدیل کیا جائے کیونکہ آمدنی کے بارے میں جھگڑے ہو سکتے ہیں۔ اسکے بارے میں ثبوت لینا تردید پیش کرنا وغیرہ اس قسم کے جھگڑے ہو سکتے ہیں۔ اسٹری میں کہونگا کہ صحیح طریقہ لینڈ روپنیو کے لحاظ سے شخص سے معاوضہ کو ہو سکنا ہے۔ لینڈ روپنیو کے ۱۔ گونا یا ۲۔ گونا جیسی بھی صورت ہو ماہرین کی رائے لیکر تعین کیا جائے تو مناسب ہوگا۔ ماہرین قانون سے کنسٹنٹ (Consent) کرسکتے ہیں کہ لینڈ روپنیو کے ۱۔ گونا یا ۲۔ گونا کتنا کتنا سعادتیہ دیا جاسکتا ہے۔ قانوناً جستقدر کم معاوضہ دیا جاسکتا ہے اوسی قدر معاوضہ کا تعین کیا جائے۔ کم سے کم اقل ترین معاوضہ جسکی کانسٹی ٹیوشن اجازت دے دیا جانا چاہئے۔

میں ایک اور چیز عرض کرنا چاہتا ہوں۔ وہ یہ کہ کمپنیشن کن صورتوں میں دیا جا رہا ہے ہمکو اسپر بھی غور کرنا چاہئے۔ سائز چار فیملی ہولڈنگ سے زیادہ اراضی ہوتا اس کے لئے کامپنیشن دیا جاتا ہے۔ خواہ زین انعامدار کے قبضہ میں ہو یا نیٹ کے قبضہ میں ہو یا قابض قدیم کے قبضہ میں ہو۔ سائز چار فیملی ہولڈنگ قابض کے حق میں چھوڑ کر بقیہ اراضی لیجائے تو کمپنیشن دیا جائیگا۔ یہاں لیا اور دینا دونوں اصول مضر ہیں۔ سائز چار گونا اراضی جو سیلنگ کی ہے وہ مفت ہیں دیجائے یہ کچھ ثبیک نہیں ہے۔ کاشتکار یا نیٹ جو اس قانون کے ماثر سے پڑے دار سورہا ہیں اس سے معاوضہ لیکر پڑے کر رہے ہیں۔ اس میں ایک قص نہیں ہے کہ قابض قدیم یا انعامدار سے حکومت کوئی معاوضہ نہیں لے رہی ہے۔ ہمارا برتاؤ سب کے ساتھ

یکسان ہونا چاہئے - پروتکٹیو ٹینٹ اور دوسری ٹینٹ سے معاوضہ اپنے خیں تو بھر قابض قدیم سے جس پڑھے داری کے حقوق دئے جا رہے ہیں معاوضہ کیوں نہ ہے جائے - جب انعامدار کے لئے سائز ہے چار گونا چھوڑ رہے ہیں تو وہ سے بھی معاوضہ نہ چاہئے

مسٹر چیر من : آپ اور کتنا وقت نیکے ؟

شری کے - وینکٹ رام راؤ : میں ۱۰ منٹ میں اپنی تحریر ختم کرت ہوں ۔

(Recess) سٹر چیر من : پھر تو آپ بعد میں تقریر کیجئے - اب ہم ریسیس، کے لئے برخاست کرتے ہیں ۔

The House then adjourned for recess till Half Past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Half-Past Five of the Clock.

[*Shri B. D. Deshmukh (Chairman) in the Chair*]

شری کے - وینکٹ رام راؤ : میں عرض کر رہا ہیں کہ جو اراضیت انعامی ہیں وہ اس قانون کے تحت گورنمنٹ کو وسٹ ا Vest کے لیے ہو جائیں گے - تو پھر جو قابضین ہوں گے خواہ وہ انعامدار ہوں ۔ یا قابض قدیم ہوں با جیسا کہ تین قسم کے ٹینٹ بتائے گئے ہیں اون کے قابض اگر بته ہوگا تو اون سے رقمہ لی جائے گی ۔ لیکن جیسا کہ ڈرافٹ بل میں بتایا گیا ہے انعامدار قاض سے کوئی معاوضہ نہیں لیا جائیگا ۔ میں گورنمنٹ کو یہ موجہ دینا پاہتا ہوں کہ اون سے بھی معاوضہ لیا جائے جیسا کہ ذوسروں سے لیا جاتا ہے ۔ عام ٹینٹس اور انعامداروں میں ڈسکریشن Discretion کرنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ اس کی وجہ سے پکسانیت کا عمل ہوگا ۔ اور اس کی وجہ سے جو نصیحت اس قانون میں پایا جاتا ہے وہ بھی دور ہو جاتا ہے ۔ اس کے قطع نظر میں یہ کہوں گا کہ یہ ایک جامع قانون ہے اور آج کے حالات کے تحت جو بہتر سے بہتر قانون بن سکتا ہے وہ یہی قانون ہے جو نافذ ہو رہا ہے ۔ لیکن اس کے ساتھ ساتھ مجھے ایک دو چیزیں اسکے بارے میں عرض کرنا ہے ۔ ڈرافٹ بل کے بارے میں یہ بتایا گیا کہ اس کے نفاذ کی تاریخ حکومت اپنے ہاتھ میں رکھی ہے ۔ اوس کے تحت حکومت اس کے دفعات کو وقتاً فوتاً نافذ کر سکے گی ۔ میں کہوں گا کہ یہ مناسب طریقہ نہیں ہے ۔ جب ہم کوئی قانون بنانے ہیں تو اوس کا نفاذ فوراً ہونا چاہئے ۔ اس لئے اس حد تک اوس میں ترمیم کی ضرورت ہے ۔ اگر تاریخ اشاعت جریدہ سے اس کا عمل ہو تو بہتر ہے ۔ کیوں کہ اس ہاڑز سے یہ قانون پاس ہونے کے بعد اوس کے لئے راج پرمکھ یا پریسیڈنٹ کے انت (Assent) کی ضرورت ہو گی تب کہیں وہ نافذ ہوگا اور اس اثناء میں حیدرآباد اشیٹ میں بجز اون دو قسموں کے انعامات کے کوئی اراضی انعام باقی نہیں رہے گی ۔ ہر یہ اراضیات انعام گورنمنٹ میں وسٹ ہو جائیں گے اور ویشٹ کا ہر وہی ایک دم ختم ہو جائیکا ۔ جب

بوروی زمین حکومت کو حصہ عوچے گئی تو پھر اوس کے نشانہ بیوشن کی سیڑھی آئی گی۔ اُنہوں کے نئے قواعد بننے ہو گئے اور قواعد بننے کے بعد زمینات ری الٹ (Reallot) کئے جائیں گے۔ چونکہ حکومت کے احکام کا منشاء یہ ہے کہ رقم انعامی اراضیات کی اقسام میں وصول کرنا ہے اس نئے جد از جند اس قانون کو نافذ کیا جائے تو حکومت کو فائدہ ہو گا۔ اس کے علاوہ میں یہ بھی عرض کروں گے کہ جہاں تک ہو سکے نیشنی ایکٹ اور اس قانون میں مشابہت پیدا کرنی چاہئے۔ کیوں کہ یہ دیکھنا جا رہا ہے کہ دونوں قوانین میں بعض بعض مقامات پر اختلافات ہیں۔ اوس کے علاوہ اس قانون سے یہ بھی ظاہر ہو رہا ہے کہ وہ تابع نیشنی ایکٹ رہے گا۔ نیشنل میں عرض کروں گا کہ اگر کوئی شخص پرونیکٹیڈ نیشنٹ سے دفعہ (۲۰۰) قانون نگنڈاری کے تحت اراضی حصہ کرنا چاہے تو لازمی صور پر پرونیکٹیڈ نیشنٹ کے پاس کم از کم یہ سک کہ ہونڈنگ کی ضرورت ہو گی۔ اگر پرونکٹیڈ نیشنٹ کے پاس اس سے کہ اراضی ہے تو پھر اوس کو یہدخل نہیں کیا جاسکے گا۔ اسی طرح سے اس میں بھی ہونا چاہئے۔ اگر کسی صورت میں یہ ضرورت داعی ہو کہ انعامدار کو پرونکٹیڈ نیشنٹ یا آرڈینری نیشنٹ سے کوئی اراضی دلاتی جائے تو دفعہ (۳۰۰) نیشنی ایکٹ کا تعلق اس سے بھی متعلق رہے۔ اس کی وجہ سے جو تقریباً اس قانون میں پایا جاتا ہے وہ دور ہو جائے گا۔ قانون کے تحت جو حقوق نیشنٹ کو ملتے ہیں وہ ملنے چاہئیں۔ اس کا یہ مطلب ہے کہ بعض صورتیں جو نیشنٹ کے خلاف ہیں وہ بھی لا گو کردنے جائیں۔ مثلاً یہ کہ اگر کسی پرونکٹیڈ نیشنٹ کو قانون لکانداری کے تحت کوئی اراضی خریدتا ہے تو اوسکے کمپنیشن کی ادائی کے لئے بہ ہزار دشواری اوس کو رقم فراہم کرنی پڑتی ہے۔ اس لئے وہاں آئٹھ سال کے اقساط بھی مقرر ہیں۔ لیکن یہاں پر دیکھا جائے تو کمپنیشن بہت کم ہے۔ اس لحاظ سے اس قانون میں بھی بعض ایسی صورتیں ہیں جو پرونکٹیڈ نیشنٹ کے لئے اچھی ہیں۔ اس میں کوئی قباحت کی بات نہیں ہے۔ اوس کے بعد قابض قدیم کی تعریف ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ قابض قدیم کی جو تعریف یہاں کی گئی وہ مذہب اور مبہم ہے۔ عدالتوں میں جانے کے بعد اس کی تغیری مختلف طور پر ہو گئی جس کا نتیجہ یہ ہو گا کہ مقدمہ بازی ہو گی اور حقیقی انصاف ہونے میں خلل واقع ہو گا۔ اس لئے قابض قدیم کی معین تعریف ہوئی چاہئے۔ ہمارے پاس قانون کے لحاظ سے قابض قدیم کا رتبہ اراضیات انعامی کے بارے میں قائم ہے۔ اگر ترتیب منتخب سے قبل کوئی شخص قابض ہو وہ قابض قدیم کہا جائے گا۔ اوس کے بارے میں اصول یہ ہے کہ اوس کو اراضی سے بے دخل نہیں کیا جاسکیا۔ وہ اراضی چونکہ عطیہ ہے جو منتخب کے ذریعہ ایک شخص کو دی گئی ہے اس لئے ریویو یا بھی اوس شخص کو دیا جائے گا۔ اور جو حقوق اور ذمہ داریان عام پڑے داروں کی ہیں وہی اس کے لئے بھی ہیں ایکن ملت کا تعین نہیں ہے۔ قابض قدیم کی تعریف کے سلسلہ میں یہ اعتراض کیا گیا ہے کہ جو شخص بارہ سال سے قابض ہے اور ڈاکیومنٹ (Document) کی وجہ سے نہیں ہوئی بلکہ معقول ستاویز ہی کی بناء پر عمل ہو رہا ہے اوس کو بھی قابض قدیم قرار دیا جائے۔ یہ اصولاً صحیح نہیں ہو سکتا۔

اگر اوس کے حقوق ملکیت دلانا ہی ہے تو دوسرے ذرائع اختیار کئے جاسکتے ہیں لیکن قابض قدیم کی تعریف اس سے متعلق نہیں ہو سکتی۔ اس قانون میں قابضین کی کیمیگوریزی Categories کی گئی ہیں یا تو و انعامدار ہونا ہے جو اس قانون کے پہلے سے ہی قابض ہے۔ ایکن کسی نہ کسی وجہ سے کسی دوسرے کام اس قانون کے نام منتخب جاری کیا گیا ہے۔ یہ پیچیدگی بھی ہو سکتی ہے۔ اس کے بعد یہ بھی طئے ہوا کہ ایسے قابض انعام کو بنے دخل نہیں کیا جاسکے گا۔ اوس کے حقوق کیتاً مالک اراضی کے ہوں گے اور جو مالگزاری گورنمنٹ کو دی جاتی ہو وہی اوس کو دی جائے گی۔ یہ صراحت اس قانون میں بھی ہو جائے تو مناسب ہے۔ اگر (۱۰۲) سالہ قابض کو قابض قدیم قرار دیا جائے تو اڈورس پوزیشن (Adverse position) ہونا چاہئے لیکن ایسی اڈورس پوزیشن اراضی انعام کے بارے میں نہیں ہو سکتی۔ دوسرے دفعات بھی ایسے ہیں جن کے تحت تمام اراضی گورنمنٹ کو وسٹ ہو جائے گی۔ اور پروٹیکٹیڈ ٹینٹ وغیرہ کی ذمہ داریاں گورنمنٹ کو وسٹ ہو جائیں گی اور اوس کے بعد وہ ری الوکیٹ (Allocate) ہوں گی۔ اس لحاظ سے زائد از بارہ سال کے جو قابض قدیم ہیں اون کو قابض قدیم کی تعریف میں لینے کی ضرورت نہیں ہے۔ اس کے بعد جو دوسرے لوگ قابض ہوں گے وہ پروٹیکٹیڈ ٹینٹ کی تعریف میں آجائیں گے۔ پروٹیکٹیڈ ٹینٹس۔ ہرمینٹ ٹینٹس اور وہ قابض جو بہ حیثیت قولدار ہیں اور نان پروٹیکٹیڈ ٹینٹ ہیں اون تینوں کی ذمہ داری اور حقوق مساوی ہیں۔ اب یہ کہنا کہ جو شخص بارہ پندرہ سال سے قابض ہے یا کوئی معاہدے کی بنا پر قابض ہے اوس کو قابض قدیم قرار دیا جائے تو پیچیدگیاں ہوں گی کیوں کہ گورنمنٹ کے مقابلہ میں تو (۶۰) سال کا عیضہ ہوتا چاہئے تب ہی حق ملکیت حاصل ہوں گے۔ غرض یہ کہ اس میں پیچیدگیاں ہیں۔ ایسے حالات پیدا کرنے کا ذجہ یہ ہو گا کہ لوگ عدالت میں جائیں گے وکلا دونوں کو پریشان کریں گے اور جائے والوں کے نسبان ہو گا۔ اس کے بعد اڈمنیسٹریشن اف جس شن (Administration of Justice) کے لئے جو طریقہ رکھا گیا ہے میں کہوں گا کہ وہ صحیح ہے۔ یہاں کلکٹر کو کمپنسیشن مقرر کرنے کا اختیار دیا گیا ہے اور یہ بھی اختیار دیا گیا ہے کہ اگر کوئی شخص نوراً اس کے متعلق درخواست دے تو ٹریبیونل کو ریفر (Refer) کا جا سکتا ہے۔ اس، ٹریبیونل میں ایک ایسا شخص بھی رہے گا جس کا درجہ ٹسٹر کٹ جیج سے کم نہ ہے۔ اور ٹسٹر کٹ جیج کا درجہ حاصل کرنے کے لئے کم از کم ۱۰ سالہ ہریکٹس کی ضرورت ہے۔ گویا وہ شخص کافی تجربہ کار ہو گا۔ اس لئے اسید ہے کہ ہر طبقہ کے لئے انصاف ہو گا۔ اس کے علاوہ کلکٹر کے نیصلہ کی تو زاضی سے روپیہ بورڈ میں اپیل کرنے کی ضرورت نہیں ہے بلکہ اوس کی اپیل ٹریبیونل ہی سماعت کریگا۔ اور اوس کے بعد ہائی کورٹ میں بھی اپل ہو سکے گی۔

ان حالات میں مور آن دی بل جتنی ترمیمات ہیں فوراً ناقذ کرنے کے بارے میں انعامداروں سے کچھ معاوضہ وضول کرنے کے بارے میں اور قانون لگانلاداری کے بعض میکشنس کو لینے کے لئے معمولی سی ترمیمات کر لیں تو یہ بہتر سے بہتر قانون نابت ہو گا۔

اور میں عرض کرتا ہونکے انعامداروں سے بڑھ کر ٹینٹس اور قابضین کو فائدہ ہو گا۔ البتہ اس کے لئے کوشش کرنے کی ضرورت ہے۔ اگر اس قانون کے بارے میں غلط فہمی پیدا کریں اور یہ کہتے پھریں کہ اس سے انعامداروں کا فائدہ ہو رہا ہے۔ چار پیلیں انسٹیوشنس ہی فائدہ اٹھا رہے ہیں اکسپلائٹ کر رہے ہیں تو اس سے جو فائدہ ہو سکتا ہے وہ نہ ہو گا۔ اسلئے ہاؤز سے میری یہ اپیل ہے کہ وہ اسکو صحیح اسپرٹ میں سمجھیں۔

اسکے بعد ترمیمات کی حد تک جیسی ترمیمات مناسب سمجھا میں نے بیش کی ہیں۔ اگر کنسٹرکٹیو سو چنائیں دیسکرے ہیں۔ اگر یہ ریزیل ہیں خواہ وہ ادھر سے آئیں یا اودھر سے انکو قبول کیا جائیگا۔

*^{شیخ} کے رامانandra رئیس : (రామన్నమేట) — మిస్టర్ స్టీవ్ కర్, సర్,

నیస్టచినుంచి ఈ ఇనాముల రద్దు బිల్లు నొరి చర్చలు జరుగుతాయాయి। ఈ చట్టం ప్రధానంగా అరజిమక్క, అప్రోర్, శేరీ ఈనాముల భూములకు వర్తిస్తుంది。 మిగతా ఈనాములకు ఈ చట్టం వర్తించదు。 మొత్తం హైదరాబాదు పైటులో ఈ భూముల సంఖ్య తీసుకుంటే బలవత్తా ఈనాములు గానీ, నేప్పింది ఈ నాములుగానీ దేవాలయ ఈనాములుగానీ, దాదాపు 13, 14 లక్షల ఎకరాల భూమి వున్నది。 దేవాలయ ఈనాముల భూమి 3/3/1, 4 లక్షల ఎకరాలన్నా బలవత్తా ఈనాముల వేరుమిాద వున్నది అయిదారులకులు ఎకరాలన్నా, మహారు ఇది 10 లక్షల ఎకరాలదాకా మినహాయిస్తే, ఇక మిగిలేది 4 లక్షల ఎకరాలు మాత్రమే దాదాపు వనపర్తి గద్వాల్, కొల్లాపూర్ సంస్కారాల్ల లక్ష ఎకరాలపైన వుంది。 ఈ విధంగా కొడ్డిమండ్ల వ్యక్తులకు మేలు చేయడానికి ఈ చట్టం తీసుకు రాబడింది。 ఇక్కడ బలవత్తా ఈనాముల గుర్తించి చెప్పేరు。 గ్రామాలలో ప్రజలకు ఉపయోగపడే నేన చేయడానికి ఆ రోజులలో, ఆ ఈనాములు యిచ్చారనే విషయా అందరికి తెలుసు。 కానీ ఆచరణలో ఏమి జరుగుతన్నదంటే దాదాపు కొన్ని సంవత్సరాలనుంచి ప్రజలలోపల, ఉద్యోగస్తులకు కేవలం చాకరీ, పెట్టి చేయడానికి, ఇష్టవుద్దోయని తెలుస్తుంది。 అథేకారులు, వత్కోదారులు దానిని ఉపయోగిస్తాయానీ అందరూ వచ్చుకోంటున్న విషయమే.. పెట్టి రద్దుకు చట్టమయితే వుంది。 కానీ ఆచరణలో ఏమి జరుగుతన్నది。 ఒక ఉదాహరణ ఇస్తాను。 ల్యాండ్ సెస్సన్ (Land Census) గ్రామాలలో 10, 11 మందిని తీసుకొనిపోయి వారికి ఏమీ ఇవ్వకుండా వని చేయంచుకోంటున్నారు。 ప్లైగ్ ఏమని చేయతన్నారంటే “ మిారు పెట్టికి వస్తేనే ఈనాములు దక్కతాయి。 తేకపోతే తేదు ”, అని చేయతన్నారు。 కొఱట్టే ఈ విధంగా బీద ప్రజాకించేత పూర్తికి పని చేయంచుకోంటున్నారు。 ఆ శాసనాన్ని అమలులో పెట్టడానికి ప్రభుత్వం ఏమీ ప్రయత్నించడం తేదు。 ఈ లోపాలను గుర్తించి మంత్రులకు రీప్రైజింటు చేశాముకూడా, కానీ ఇంతవరకు ఆచరణలో పెట్టితేదు。 ఈ విషయంలో ప్రభుత్వం పూర్తిగా ఫైల్యార్ (Failure) అయింది。 పెట్టి తీసుకోకూడని ఇస్తాను చేశారు, కానీ ఆచరణలో పెట్టాలటేదు。 ఈ భూములకు వట్టలు చేస్తే బాగుంటుంది。 ఆ విధంగా పట్టచేసే వచ్చేపోవేమిటని నేను అడుగుతన్నాను。 అతో పట్టపు చేస్తే లక్షలాధి ప్రజాకించనుంచి పెట్టి తీసుకొనుట ఇక పోతుంది。 పట్టు చేయటలన పెట్టి భూరం కొగందు. పట్టు చేసిన తరువాత “ మాపేరపట్టు ఆయనది కొఱట్టి పెట్టి చేస్తు వక్కిర

తేదు” అని మానసికంగా వారీలో భావం ఏర్పడుతుంది. ఇప్పుడు ఆచరణలో ఆ చట్టం నిరుపయోగంగా లుస్సుట్టు చూస్తున్నాం. అందుకొరకు పట్టుచేయడం అవసరమని జ్ఞానున్నాను. ఆ ఈనాములనన్నీ ఈ చట్టంలోకి తీసుకు రావాలి.

తరువాత దేవాలయాల గురీంచి, అక్కడ పూజచేయుకూడదని కౌదు. పూజకు అయ్యే థర్మలు యివ్వుకూడదని మేము చెప్పటిలేదు. తప్పనిసిగా దేవాలయాలను కూడా, సంరక్షించాలి. ఇప్పుడు ఈ దేవాలయాలకు కమిటీలు ఏర్పడ్డాయి. కానీ ఈ కమిటీలు ఏమి చేస్తున్నాయి. ఉండపారణకు సూర్యావేట తొలూకా అరవపల్లీలోని దేవాలయానికి వెల్యు ఎకరాల భూమి లుస్సుది. దాదాపు నూరు సంవత్సరాలనుంచి అక్కడ రైతాంగం ఇళ్ళు కట్టుకొని, గుడినెలు వేసుకొని ఆ భూములు సేవ్యం చేసుకొంటూ వస్తున్నారు. ఈ మూడు నొలఁగు సంవత్సరాలనుంచి అక్కడ కమిటీ ఏర్పడింది. వారు మున్ఫా పెంచి పూర్ణా పెడుతున్నారు. కానీ ఆ బీద రైతులు తీసుకోలేక పాతున్నారు. అదీ ఎక్కువ డబ్బు చెల్లించినవారి చేతుల్లోకి పోతోంది. నూరు సంవత్సరాలనుంచి సేవ్యం చేస్తున్న రైతుల స్తితిగతులు ఏమిటి? అని ఈ రైతుల గురించి ప్రభుత్వము ఏమి ఆలోచించుటిలేదు. కనీసం ఈ రైతులను అక్కడ భూమి నుండి బేటిలు చేయు కుండా గ్రౌంటి ఇవ్వడానికి చట్టం తీసుకరొడడం అవసరం. ఆ ఏధంగా బీద రైతులను రక్తించడానికి చట్టం ఎందుకు తీసుక రారని ప్రభుత్వాన్ని అడుగుతున్నాను. దేవాలయ భూములు సాగుచేసే రైతులకు రత్ణం ఏమి తేదు. దాదాపు 3 లక్షల ఎకరాల భూమి ఈ రైతాంగం పాతుల్లో వుంది. ఈనాందార్లను నూటికి 20, 25, 30 వరకు నష్టపరిహారం యిప్పించడానికి ఈ ప్రభుత్వం సిద్ధంగా వుంది. కానీ బీద రైతులకు ఏమి రత్ణం కల్పిస్తుందో? దేవాలయ భూములను సాగుచేసే రైతులకు కూడా చట్టంలో రత్ణం కలిగించాలి. మాల్క గుజారి పేరుమిదవచ్చేది నసూలు చేసి ప్రభుత్వం వాటిని కొపాడ వచ్చును.

ఈ చట్టాన్ని చూసిన తరువాత ఇంకోక విషయం ఏమి తేలుతోందంటే, అసలు ఈనాం భూమి ఆచరణలో రద్దుయిపోయింది. ఇక్కడ గౌరవ సభ్యులు చెప్పారు. గద్వాల్, వసపర్తీకొల్తాపూర్, ఈ పెద్ద పెద్ద సంస్థనాలవారు 20 సం. లు ఆ సం.లు రకం యిచ్చే పద్ధతిని, అమ్మకాన్నారు. ఆచరణలో దాదాపు ఈనాం భూములు రద్దుయిపోయినప్పెన్నని ప్రిజలు కూడా అనుకోయిన్నారు. కానీ ఈనాందార్లకు ప్రిభుత్వం హక్కులు కల్పించి ఈ చట్టంద్వారా నూటికి 20 వరకు నష్టపరిహారం యిప్పించడానికి ప్రియశ్శిస్తోంది. మేముకూడా భారతరాజ్యాంగ చట్టాన్ని అంగీకిస్తోం. దానిని కౌదనడం లేదు. దానిలో నష్టపరిహారం యివ్వాలని వుంది. కానీ నూటికి 20, 25, 30 యివ్వాలని ఆ రాజ్యాంగ చట్టంలో ఎక్కడ రాసిలేదు, నూటికి 25, ఎందుకు యివ్వాలి? ఈ ఎందుకు యివ్వుకూడదు? ఇది చూస్తే, చిట్టికి పాతున్న ఈనాందార్లను, జమిందారీ వరాగ్ని చట్ట రూపంలో యింకా కొన్నాళ్లు కాపాడడానికి ఇటువంటి చట్టాలు తీసుకు రాఖడుతున్నాయని స్పష్టంగా తేలుతోంది. భారత రాజ్యాంగ చట్టపరికారం నష్టపరిహారం యివ్వాలంటే నూటికి 1, 2, 3, 4, ఎందుకు యివ్వుకూడదు? ప్రిజానికం యొక్క డబ్బు తీసికొని నూటికి 20, 25 ఎందుకు యివ్వాలి? ఈనాందార్లు, ఈ జమిందారీ వద్దం ప్రిజానికంసంచి చెస్తులు వసూలు చేపుకు పాతున్నారు. గద్వాల్లో పోలీసుచర్చ కాలంసంచి ఈ అన్వయాన్ని ప్రిజలు నిరశిస్తున్నారు. కానీ ప్రిభుత్వం ఈనాందార్లను రక్తించడానికి

సిద్ధం అవుతోంది. ఈనాంలు పూర్తిగా రద్దు ఆయపోతాయని చట్టంలోవుండేనా, చిత్తికి పోతున్న ఈనాందార్థకు మాత్రం అం ఏళ్లువరకు ఈ వృథాత్మణం డబ్బు యిప్పిస్తాంది. ఈ నష్టప్రిపోరం రొండు విధాలుగా వుంది. నాలుగుస్వర కుటుంబ కమ్మతొలకు మీంచిన భూమి వున్నవారికి పంటకు పది రెట్లు యివ్వాలని, సాగు జరగని భూములకు నాలుగు రెట్లు యివ్వాలని, రెండు విధాలుంది. రాజ్యం చట్టంలో ఇంత పరైంటు యివ్వాలని ఎక్కుడా లేదు. కొని ఆ రాజ్యం చట్టాన్ని సాకుగా తీసుకొని జమిందార్థకు, ఈనాందార్థకు, లతొల్ది రూపాయులు నష్టప్రిపోరం క్రింద యిస్తున్నారు. ఇదంతా చూస్తే, జమిందారీ వర్గాన్ని కొచ్చడానికి భోధ పడుతోంది. రైతాంగంయేక్క హక్కులను గుర్తించకుండా ఈ చట్టాన్ని తీసుకురావడం జరిగేంది. దవా మిాకోలు ఆనగా పర్మ నేటు కోలువొర్కు ఎవరైతే ఫున్నారో ఇంఖంకి పూర్వం వారిని గుర్తించాలని ఈ చట్టంలో వుంది. ఈ పురతు ఎందుకు పెట్టారు. వారు చాలా వరకు అమ్ముకొన్నారు. ఇంఖం తరువాత ఎక్కువ మంది దవా మిాకోలు పొందారు. కొబట్టే ఇంఖం తీసివేసి ఇంతవరకు అందరించి గుర్తించాలని ఎందుకు పెట్టుకూడదని నేను వృశ్మిస్తున్నాసు? లేనిచో రైతాంగానికి విపరీతిగా నష్టం కలుగుతుంది. కొబట్టే ఇంఖం తరువాత దవా మిాకోలు పొందిన వారందరిని కూడా గుర్తించాలని నేను కోరుతున్నాను.

తరువాత భాషిజే భదీము పురాతనం నుంచి వస్తున్నవారినుంచి సూటికి, అ, 3 కంటే ఎక్కువ తేదు. గోపాల్ చేట్ సంస్కారంలో నూటికి అ, 3 పరైంటు వుంది. మిగతా సంస్కారాలలోనీ భాషిజే భదీం లేనే లేదన్న మాట. కొని ఎందుకు తీసుకు వచ్చారు? అరథిత్, రక్తిత్ కోలుదార్థ గురించి వున్నది. అరథిత్ కోలువొర్కునుంచి భూమిని తీసుకొన్నాం తే అతని వేర పట్టా చేస్తే ఇం యివ్వాలని వుంది. ఆ రైతాంగం దగ్గరనుంచి ఇం ఎందుకు తీసుకోవాలి? గం ఎందుకు తీసుకో కూడదు? రైతాంగానికి తక్కువలో తక్కువ సౌకర్యం కలిగిస్తా, సాధ్యమైనంత ఎక్కువ రక్షణలు జమిందార్థకు, ఈనాందార్థకు కలిగించడానికి ఈ చట్టం తీసుకు రావడం జరుగుతోంది. ఈ విషయాలన్నీ వాస్తవాన్ని నష్టటికి “అతా చెప్పడం పరిపిపత్తం వారికి అలవాటు, వారు, ఎప్పుడూ వృథత్వాన్ని ఎల్లి పడేన్నాంటారు” అని అధికార వర్గం వారు అనుకోకుండా యదార్థమైన విషయాలన్నావా లేవా అని అథికారవంలో కూర్చున్నవారు బాగా ఆలోచించాలని కోరుతున్నాను. దేవాలయ ఈనాములు గుర్తించిగాని, ఇతర ఈనాముల గుర్తించిగాని రైతాంగానికి రక్షణలు కలిగించడానికి అటువైపు సభ్యులుకూడా వృథత్వం మీద పత్రిడి తీసుకు వస్తురని ఆశిస్తూ నేను యింతటితో మంగిస్తున్నాను.

شري کے۔ وینکٹ رام راؤ (چانا کونوڑا) :— مسٹر اسپیکرسر - جو بل هارے سامنے پیش کیا گیا ہے اسکو نیش کرنے وقت خود منسٹر صاحب یہ فرمائے تھے کہ ہم اس بل کو مساوات لانے کے لئے اٹراؤ ڈیوس کر رہے ہیں کہاں تک مساوات لا رہے ہیں اور کہاں تک نہیں لارہے ہیں اسکو چھوڑ کر میں بل کے قدو خال اور اسکے جو اثرات ہونے والے ہیں ان پر روشنی ڈالنے کی کوشش کروں گا۔

اس میں ایک چیز یہ ہے کہ اس قانون کے ذریعہ فکری آف ٹینیور یا نکری آف رنٹ (Fixity of tenure or fixity of rent) کا تحفظ اس رعیت کو جو مذہبی اور خیراتی

انعاماً، رون کے تحت ہیں ملتا ہے یا نہیں اس قانون سے انکا پروٹوکشن ہوتا ہے یا نہیں جنکی کہ تحفظ کی سخت ضرورت ہے۔ اس معیار سے اگر ہم سوچیں تو چلے ہی دفعہ (۳) ملتا ہے۔ اس میں یہ بتایا گیا ہے کہ مذہبی معاشوں سے یہ قانون متعلق نہوگا۔ میں پوچھتا ہوں کہ ایسی اراضیات پر کاشت کرنے والے ٹینش کے حقوق کا آپ کیا تحفظ کر رہے ہیں۔ مجھے اسپر زیادہ کہنا نہیں ہے۔ میں صرف یہی کہوں گا کہ جس قانون کو منسوخ کر کے آپ یہ قانون لارہے ہیں اس میں اور اس میں کیا فرق ہے۔ دفعہ ۳۲ کے ذریعہ جس قانون کو ہم منسوخ کر رہے ہیں اس میں پڑھ کیا جاسکتا ہے۔ سنہ ۱۹۵۲ ع میں وہ نافذ کیا گیا تھا۔ وہ بھی کانسٹی ٹیوشن کے نفاذ کے بعد ہی کا قانون ہے۔ البتہ بعض مقامات پر اسکا اعلان ہوتا تھا۔ اعلان نہوئے کی وجہ سے اسپر عمل نہیں ہوا۔ اس قانون اور اس قانون کا مقابلہ کریں تو معلوم ہو جائیگا کہ ہم آگے جا رہے ہیں یا پیچھے جا رہے ہیں۔ مجھے یہ کہنے کی ضرورت ہی نہیں کہ پیچھے جا رہے ہیں۔ اس قانون کے تحت تین فریق ہوتے ہیں۔ ایک فریق حکومت ہے۔ دوسرا فریق انعامدار اور تیسرا فریق اراضی پر کاشت کرنے والی رعایا۔ ہمیں اس پر غور کرنے کی ضرورت ہے کہ ان تینوں فریقین کے حقوق کی اس قانون میں کہانتک حفاظت کی گئی ہے۔ اس میں پہلے حکومت اور انعامدار دونوں کے باہمی تعلقات کا مطالعہ کریں۔ اس قانون کو دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ انعامدار کے حقوق حکومت کے مقابلہ میں تو قطعی نہیں ہیں۔ انعامدار کے حقوق محدود ہیں۔ کیونکہ حکومت ہر عطا کی مالک کل ہوتی ہے۔ اور پھر وراثت کی منتظری کے وقت حکومت کو یہ اختیار رہتا ہے کہ چاہے انعام کی وراثت منتظر کرے یا نہ کرے۔ یہ ہر انعام کا قانونی پوزیشن ہے۔ اور پھر انعامدار چاہے تو انعام سے دستبردار ہو کر اپنے تام پڑھ کرواسکتا ہے۔ لیکن حکومت تو مالک اعلیٰ کی حیثیت رکھتی ہے۔ ہمارے پاس انعامات مختلف قسم کے ہیں۔ بعض سندی ہیں بعض بلا سندی ہیں۔ بعض تاحیات بحال شدہ ہیں۔ لیکن حکومت ان سب کی جانب ایک ہی طریقہ سے کر رہی ہے۔ ایسا شخص جسکا انعام تاحیات بحال شدہ ہے وہ خود حاضر ہو کر جمعبندی میں شریک خالصہ کر کے سالم رقم ادا کرنے پر رضا مندو ہوتا ہے یا ہو سکتا ہے تو ایسے شخص کے لئے بھی آپ معاوضہ دینے والے ہیں۔ اس طرح آپ محدود مالکوں کو قطعی مالک تصور کر رہے ہیں۔ یہ عطیات کے منشاء کے مغائرہ۔ اب بھی عطیات کی وراثت میں بے سندی انعام ہوتو انعام کا ۱۵ فیصد حصہ شریک خالصہ کر لیا جاتا ہے۔ اسکے ساتھ حکومت ہمیشہ نذرانے یا یکسالہ محاصل یا دو سالہ محاصل وصول کرنے کی رہتی ہے۔ اب بھی عطیات انکوائیز ایکٹ کے ذریعہ جو قانونی موقف ہے اسکو ویسے ہی بحال رکھا گیا ہے۔ اور حکومت انعامداروں کو ایسے حقوق یہی ادا کر رہی ہے جو اس قانون کے نفاذ سے پہلے انہیں حاصل نہیں تھے۔ اس کا کوئی جواز نہیں ہے۔ ۲۶ جنوری سنہ ۱۹۵۰ ع کو کانسٹی ٹیوشن نافذ ہوا اس سے پہلے انعامداروں کو انعام پر جو حقوق تھے وہ بالکل محدود تھے۔ وہ محدود مالک تھے۔ دستور کے آرٹیکل ۲۱ یا ۳۱ (اے) میں رٹریسپکٹو افیکٹ (Retrospective effect) کی شرط تو نہیں رکھی گئی ہے۔ لیکن آپ انہیں یہاں زیر دستی موقوٰ دے رہے ہیں۔ کیا اس میں یہی بروگریسیوں (Progressiveness)

ہے - میں تو سمجھتا ہوں کہ اس قانون کے نفاذ سے حکومت کا منشاً سوانح اسکے اور کچھ مذہبی اراضیات سے سالم مالگزاری وصول کی جائے - میں تفصیلات میں جو جانا نہیں چاہتا کیونکہ امندش کے وقت تفصیلی بحث ہو گی - ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ اس قانون کا کیا نتیجہ ہو گا - تمام انعامداروں کے حقوق تو اسٹیٹ میں وسٹ ہونگے - اور مالکان کو انکے حقوق کے لحاظ سے مختلف حقوق پہنچتے رہیں گے - یہی ہو گا - یہ آپ کیا کر رہے ہیں - ایسے انعامدار جو اس سے قبل سرکار کو رقم ادا نہیں کرتے تھے - انکے قبضہ کو تو آپ جیسے کا ویسا ہی رکھتے ہیں مگر اب آپ ان سے سرکاری رقم وصول کرتے ہیں - اور پھر پروٹکٹیڈ ٹینٹ یا نان پروٹکٹیڈ ٹینٹ کو قانون آسامیان شکمی کے تحت کچھ حقوق کا تحفظ حاصل ہے - انہیں فگری ٹینیور کچھ حد تک حاصل ہے - اس قانون کے تحت آپ انہیں کوئی حقوق نئے طور پر نہیں دیتے - بلکہ آپ اتنا ہی کرتے ہیں کہ سرکاری مالگزاری جو معاف تھی اسکی وصولی کا انتظام کر لیتے ہیں - اور پھر اتنی چھوٹی سی بات کیا ہے انہیں معاوضہ دیا جاتا ہے - یہ کیا انصاف ہے - آپ رعایا کے حقوق کا کیا تحفظ کر رہے ہیں - اس قانون کا آخر کیا منشاً ہے - میں یہ نہیں کہتا کہ یہ قانون ہی نہیں لانا چاہئے - ضرور لانا چاہئے - لیکن آپ اسپر بھی غور کیجئے کہ انعامدار کے حقوق کس حد تک ہیں - انعامدار مرنے کے بعد اس سے کوئی معاہدہ باقی نہیں رہتا - وہ ختم ہو جاتا ہے - آپ اس سے جو محاصل مالگزاری کا کچھ حصہ معاف تھا وہ پورا وصول کرتے ہیں اور اسکن وجہ سے اسکو معاوضہ ادا کرتے ہیں - آپ کانسٹی ٹیوشن کے آئیکل (۱-۳۱) کی آڑ لیکر یہ کہتے ہیں کہ جب ہم سرکاری رقم کا اضافہ کر رہے ہیں تو معاوضہ دینا ہی پڑیگا - لیکن جب اسیشل اسسمنٹ کا قانون آیا خشکی اور تری میں ایک آنہ دو آنہ کا اضافہ ہوا تو کیا آپ نے اس کے لئے کچھ معاوضہ دینے کے بارے میں غور کیا - آپ رعایا پر محاصل میں اضافہ کرتے ہیں تو اس وقت تو کسی معاوضہ کا سوال آپ کے سامنے نہیں آتا لیکن انعام کے بل میں جہاں پہلے سے بھی اتنے حقوق نہیں ہیں اب انہیں قائم کیا جا کر اس طرح پیچیدگی پیدا کی جاتی ہے - کیا حکومت نے بذریعہ پندویست کسانوں سے یہ معاہدہ نہیں کیا تھا کہ رقم میں کوئی کمی و یہی نہ ہو گی جیسے کہ انعامداروں کو سرکاری رقم کا کچھ حصہ یا سالم معاف کر دیا جائے گا - یہ کیا مضجع کھے خیز بات ہے - انکے نام پڑھ بھی کرو اور اوندر سے پیسے بھی دو - انعامات کا یہ حال ہے کہ انعامدار انعامی اراضی کو نہ تو بیع کر سکتا ہے نہ رہن کر سکتا ہے - اس طرح انکے حقوق محدود ہیں - لیکن آپ اس قانون کے بعد انہیں یہ اجازت دے رہے ہیں کہ وہ فروخت کر لیں - اس سے قبل نظام صاحب کے دور میں انکے کیا حقوق تھے - رائیٹ آف پر اپری میں فروخت یا بیع کرنے کے جو حقوق انعامدار کو نہیں تھے وہ آج عطا کئے جا رہے ہیں اس طرح وہ آزاد ہو رہے ہیں - آزادی سے حقوق کا استعمال کرنے والوں کو معاوضہ دینے میں کیا جواز ہے - دستور کے تحت کیا جواز ہے - معاشی حیثیت سے کیا جواز ہے - میں سمجھتا ہوں کہ کسی حیثیت سے بھی اسکا جواز نہیں ہو سکتا

مسٹر چیرمن۔ آپ کتنا وقت لینگے؟

شروع ٹکری وینکٹیڈ رام راؤ : - منٹ لونگا - پروٹکٹیڈ ٹینٹ سے بھی آپ وصول

کر رہے ہیں پرمیٹنٹ ٹینٹ سے بھی وصول کر رہے ہیں - ان تمام لوگوں سے وصول کر رہے ہیں اور کچھ حصہ انعامدار کو دے رہے ہیں اور کچھ حصہ اپنے جیب میں ڈال رہے ہیں - حکومت پر اس سے بار نہیں عائد ہوگا - جو کچھ بار پڑنے والا ہے رعایا پر پڑنے والا ہے - آپ کسانوں کو کیا فائدہ پہنچا رہے ہیں - سائیں گونا چالیس گونا پیس گونا مالگزاری کا فائدہ، پہنچا رہے ہیں اس میں کونسا اصول مضبوط ہے۔

حکومت اور انعامدار کے حقوق پر تبصرہ کرنے کے بعد میں انعامدار اور کسانوں کے حقوق پر آونگا - چھوٹے چھوٹے انعامدار جو ایک ایکڑ یا دو ایکڑ کے ہیں ان لوگوں کے متعلق ہمیں کچھ کہنا نہیں ہے - انکوری ہیبلیٹیشن (Rehabilitation) کے طور پر اگر آپ کچھ معاوضہ دینا چاہیں تو دیسکرٹ ہیں لیکن رانی صاحبہ گدوال راجہ صاحب و نیق اس طرح کے راجہ صاحبین وغیرہ کو دین نو ہمیں اسپر اعتراض ہے۔ ایسے انعامداروں کو جو کوئی دوسرا سورس آف انکم (Source of income)

نہیں رکھنے ہیں انہیں آپ دیتے ہیں تو ہمیں اعتراض نہیں ہے - انعامدار اور کاشتکاروں کے حقوق کی مشا بہت جاگیر داروں اور کاشتکاروں کے حقوق سے بہت زیاد ہے - اسکو بڑی جگہ دیکھی ہے اور اسکو کم جگہ دیکھی ہے - لیکن بعض صورتوں میں اختیاراتیزی کا استعمال کرنا پڑتا ہے - ایک مثال دینا چاہتا ہوں - دیشکھوں کو سیریات دیکھی ہیں انکا رسوم دیشکھی ختم کیا گیا ہے - اون سے آج ڈیوبنی نہیں لیجا رہی ہے - ساورم بھی یہی وہ فروخت کر دیکھی ہے - اسی طرح بعض چیزوں حقیقت پر مبنی ہیں - انکے نظر انداز کرنے سے رعایا پر بیجا سختی ہونے والی ہے - ہم یہ تمام چیزوں امنٹمنٹ کے ذریعہ آپکے سامنے لائیں گے - قانون کا جو مقصد بتایا جا رہا ہے وہ صحیح نہیں ہے سوائے اسکے کہ خزانہ میں روپیہ جمع کیا جائے - اسکے سوا کسانوں کا کوئی فائدہ نہیں ہے - "مال مفت دل بیرحم،" کے مصداق ہے - اسلئے ہم اسکی تائید نہیں کرسکتے - اتنا کہتے ہوئے میں ختم کرتا ہوں۔

Shri V. B. Raju: Mr. Speaker, Sir, This Bill is directed to bring about social legislation and is an improvement over the Bill that was introduced some time ago and was withdrawn later, and also the Inams Enfranchisement Act of 1952. Hyderabad State was a feudal State, and when it was converted into or given a democratic form, certain road blocks were left in the progress of the people. The democratic Government first laid its hand on the biggest feudal, that is, the Nizam; took his personal property, Sarf-e-khas, and gave relief to the cultivators there. The problem that was confronting the Democratic Government always was how best they could come to the rescue of the 'khastkar' or the tiller. The Nizam was followed by the jagirdars in quitting the arena of intermediaries, and then the big landlords came to be considered. The Tenancy Act which was amended, more than once, has definitely brought some relief to the cultivators.

Now, in the series, we have come to the Inamdar, He is not the last man... .

श्री. रुखमाजी धोंडीबा पाटील (आष्टी) :—माननीय सदस्य अिस बिल के तहत बहुत से मालूमात देने के काबिल और बुद्धिमान हैं लेकिन यहाँ मेरे जैसे काश्तकारों के प्रतिनिधीभी बैठे हुजे हैं जो अप्रेजी नहीं जानते। अगर आप हिंदौ में बोलें तो अच्छा होगा।

شري وي - بـ - راجو : - آریل سبز میرے دوست ہیں اور میری پارٹی کے سبز بھی ہیں اون سے میں الگ گفتگو کر کے سمجھا دوں گا اس وقت مجھے معاف کریں ۔

But the Inamdar is not the last man in the series. There is also the last, but not the least, the Vatandar who is the dangerous of all these "Bhootas"—if I may say so—who have trapped the poor 'kashtkar'. With the liquidation of the Vatandari system, we can congratulate ourselves that we have taken away the obstacles in the progress of the poor 'kashtkar'. Our three years of valuable period in the life of this august body have been spent in clearing obstacles and in removing these impediments. The people at large or the common men, about whom I used to mention in this House more often, find fault with us that we have not been able to bring any positive relief to them. Time and again, our Finance Minister had complained that he had no money to meet the requirements of the common man. It can be justified, because, when these relics were being removed, they were not removed without laying any burden on the tax-payer. The Nizam took a slice of Rs. 50 lakhs ; but he later on came to realise that he was taking too much and, therefore, voluntarily surrendered O. S. Rs. 25 lakhs from this year. We have been considering to lessen the burden of the tax-payer by reducing the commutation to jagirdars, also.

Now, when we consider about the Inamdars, I find that some of these Inamdars come in the class of poor workers. I have been watching carefully the speeches made by hon. Members from the Opposition side. I must say that they are contradictory some times, though equivocal also. This is the question of abolishing a system. It is not abolishing Inamdar ; it is abolishing inams.. After all, what is Inam ? Inam is a concession given to a cultivator or a landholder not to pay revenue to the Government. Do my hon. friends want that this concession should be denied to the 'balutadars' and such other people who serve in the villages ? Do they mean that this concession should be withdrawn for them also ? (*Interruptions*) I request my hon. Friends not to mix up issues. This is not an executive body. On the other hand, this is a legislating body. If an hon. Member has got any grievance about the implementation of any particular thing,

he has got the right of interpellations, resolutions, no-confidence motions, and so on. When we try to bring up a legislation, we shall not be so much worried about the administrative lacuna or the administrative confusion that may be caused if some officer has not properly conducted himself. A legislation should not be so circumvented as to remove that particular thing. I am afraid, we cannot pass legislation for preventing all the mischievous actions of every officer. That is not the way of legislating on a major matter. Let us, therefore, keep the issues separate. I have been very often requesting the hon. Members of this House, more particularly the members of the Opposition, that we have to treat certain things as political, certain things as economic, and certain other things as purely academic in their nature. While considering this legislation, let us by all means concentrate on the economic benefits which this legislation may bring forth.

The first thing that the Government intend to do is to abolish the system. After abolishing the system, what would be the subsequent consequences. In the first place, certain gap will be formed. The Inamdar claims, for good or bad, that certain rights have accrued. The rights are not absolute. What are those rights ? Every hon. Member agrees that the Inamdar has a right to till the land without paying the rent or revenue. Nobody can deny that right. The point is, should he be compensated or not ? Supposing you take away land from the Seth-sindhi, do you want that he also should not be compensated ? Here, there is the poor Inamdar having 10 acres, 15 acres....

Shri A. Gururaja Reddy (Siddipet) : The only compensation is that no yetti should be taken.

Shri V. B. Raju : Yetti has nothing to do with this. Let the hon. Member find out a solution as to how yetti can be stopped. There is no difference of opinion in this matter. If yetti is taken by an officer, he should be punished. There is no difference of opinion on this score. What is the use of beating about the bush ? When it is not very much relevant. I am merely confining to the economic benefits and administrative conveniences.

When the Inams are abolished, certain consequences will follow. How have we to meet them ? I shall classify them

in order. All the land will vest with the Government. Government is not a tiller, and Government is not going to start major farming. It has to distribute lands among certain interests which have grown along with the Inamdar. Who are they? One is the cultivating Inamdar, and another is the so-called kabez-e-kadim. I am not sure whether it is a good term that we are using, and whether it is going to create any confusion. I would request the Government to clarify this and to specify in a clear manner as to what kabez-kadim means. Then, there is the permanent tenant. He cultivates land taken on 'munafa'. The fourth is the tenant-at-will and also the protected tenant. When all these interests are there, the problem is how to distribute this land among them. According to the Opposition Members, this legislation should have been simplified when the Tenancy Act is there, and when it extends to Inams other than services and charitable Inams. When the Tenancy Act applies to them, simply enfranchising and saying that the Inams are abolished; Inamdar is the pattedar, and that he is liable to pay land revenue to the Government, etc., will not do.

The hon. Members will appreciate that the intention of the Government or the intention of the Congress Party is not to make this Inamdar the pattedar of all the land that is his as an Inamdar. A person may hold 15,000 acres; it is a holding and there are several interests on that land. The Government does not like, or the Congress Party does not like, that he should become a pattedar for all the 15,000 acres and then claim full compensation for the land when the Government assumes the management after leaving the $4\frac{1}{2}$ family holdings for him, or that when the tenant wants to purchase the land he should pay the market rate. What the Government desires, or what the Congress Party desires, is that this land must be rationally distributed. Does the opposition agree on this point or not? I do not think there will be any difference of opinion on the question of rational distribution of this land.

شروع کے وینکٹ رام راوی:- اس کے پہلے ہی اراضی تقسیم ہو چکی ہے اب کوئی اراضی نہیں بھی۔

Shri V. B. Raju: That is to say, the land, as my hon. friend says, has already been distributed. That is about possession. I am not speaking about possession. I am speaking about the right or the title which has got greater value, because we are living in a constitutional age or a parliamentary

age ; and in a constitutional or a parliamentary age, right has more value than other things. We want to give a statutory right, i.e., the ownership right to the tenant. Is there any Member who is going to oppose it ? This is an improvement over the Tenancy Act. In the Tenancy Act, there is a provision that in an area, which the Government declares as the 'local area', tenants who are in possession of certain lands will become owners and compensation and other things will come later on. When that is our view, i.e., ultimately to make the smaller tillers as the land owners, why should we not take advantage of this legislation ? It is estimated that about 6 lakhs of acres may constitute the area in possession of a particular class of Inamdar and these 6 lakhs of acres are going to vest in the Government. Why should we lose the opportunity of making a rational distribution of this land among the four classes of the tenants—the 'Kabez-e-Kadim', the permanent tenant, the protected tenant and the other tenant. In doing so, it is said in the Bill, at the moment, that an area equal to $4\frac{1}{2}$ family holdings should be left to the Inamdar and when calculating this, the land which is under the personal cultivation of that inamdar, i.e., patta land, his own land, should be taken into account. That means, including this land, it should not be more than $4\frac{1}{2}$ times the family holding. Let our friends make suggestions as to the area of the land to be left to the Inamdar—whether it should be $4\frac{1}{2}$ family holdings, or 3 family holdings or whatever it is. We are prepared to consider it. We want to extend the same principle as we are doing in respect of the Inamdars to the other categories also. We do not want to show any favouritism to the Inamdar. So, about the distribution of land, I do not think there is any disagreement. If it is not $4\frac{1}{2}$ family holdings, whether it should be 3 family holdings or 4 family holdings, we can thrash out when we come to the particular clauses.

Then, what are the other consequences that follow ? There is the levying of a premium. When the land belongs to Government and when the Government is in need of money, it does not want to be overcharitable. So it levies a premium. It is our suggestion that premium should be levied even on the Inamdar that has been given a patta ; he should not be shown any undue favour. I am not speaking about compensation. Let us see that we treat all these categories at par. We can decide what the premium should be. I do not think there is any severe criticism about this in the speeches of the Opposition Members. The quantum of premium is very little. It is not true that Government want to make any money.

Whatever money is taken is only to meet its administrative expenses. We do not want to increase the expenditure on non-nation-building activites and do not want to see that the Five-Year Plan fails. The money that is taken is intended to meet the administrative expenses.

Then, there is the question of compensation. Do our friends agree or not that there is some right accruing—let it be as small as a particle of the sand. If charges are levelled against us that we are compensating the Inamdar, etc. we plead not guilty. This House is constituted under a Constitution; we have got a constitutional sanction. We cannot pick up a portion of the Constitution which is useful and reject the other portion. So, as long as that Constitution is there, whether it is good or bad, we have got to work under that. The only question that can be raised is : What is the reasonable quantum of compensation? There also we are prepared to discuss the matter. We too are not prepared to give any compensation on income basis. We do not want to create or provide more employment to Vakils; we do not want our poor 'riyaya' to be play-things in the hands of Vakils or Courts. We want to link up compensation to the land revenue, which should be the unit or multiple. What should be the number of multiples for compensating? If we decide on all these things, after having agreed on policies, then we need not have any apprehension that we are going to put or drive the tenant to the mercy of the Inamdar or that we are placing the Inamdar at such a level or at such a point that he continues to be a feudal relic. Let us not harbour such feelings. Let us approach this Bill purely from a social and economic point of view and let us see whether we are eradicating and liquidating the old feudal element or not. I think the Members will give that much of credit for the Congress Party that it has done something in that direction. We have paved the way and now we assure that we have kept all these things in view and when determining the premium and compensation we have seen that unnecessary burden will not be put on the treasury, secondly that the tenant will not be over-burdened and thirdly that the Inamdar will not be over-favoured. When the permanent teanant is paying 'munafa' what is it you are going to levy on him? Supposing the premium works out to less than the 'munafa' will the hon. Members agree to it? Is not the 'Kabiz-e-Kadim' paying land revenue to the Inamdar? Hereafter he will pay it to the Government and to that extent the Government will be compensating the Inamdar. The Bill has got to be judged as a whole and we must have a proper

perspective of it. If we take a small piece out of it and criticise it, we will not be doing justice. So, I request the hon. Members to lay emphasis on the clauses which involve financial implications, but about the rest they are according to the policies that have been laid down in this House from time to time by all the parties sitting together and it is a projection of the same tenancy legislation which we passed sometime ago in an amended form.

I was waiting to know whether I would be further educated on the other aspects of the Bill, but unfortunately no constructive approach, except criticism, has been put forward for the treasury benches to adopt. Our discussions at the stage of first reading should be such that we can think of some good amendments and bring them up at the stage of second reading. That has to be the approach. I was waiting for such suggestions, but unfortunately there were none. Even now, there is some time and if the hon. Members can give some concrete suggestions it will be better.

శ్రీ కె. రామేష్ నరసింహరావు :— ఈనాందారులకు ఉబ్బ ఇచ్చి భాషి కోసుక్కుసే వారు పర్మ నెంటు టెసెంల్ గా భావింప బడుతున్నారు. వారు దీనివల్ల ఏ విధంగా బెనిఫిట్ పొయితున్నారో తెలుపవలసి ఉన్నది.

Shri V. B. Raju : This is another category. This is called illegal or illegitimate category. We regularised some such transactions in the Tenancy Act. The point raised has also to be considered, viz., under which category do they come—whether as permanent tenants, or as 'Kabiz-e-Kadim', or as other tenants, and whether the definition of any particular term is to be so elastic as to cover all these people.

It has been brought to our notice that out of ignorance many of these tenants or cultivators have paid heavy sums to these big Inamdars to acquire these lands. We too have got a complaint that many jagirdars of Inam lands grabbed a lot from the tenants and cultivators.

Shri G. Sreeramulu (Manthani) : Mr. Chairman, I request that speeches be regulated according to the time-limit.

Shri V. B. Raju : If I had not been disturbed I would have completed my speech in time.

We all want that the Legislation should come into force immediately. The Government had already lost 10 to 12 lakhs of rupess which was included in the last budget.

[*Shri M. Rami Reddy (Chairman) in the Chair*]

As already mentioned, a complaint has been made about fixing up the limit. The whole trouble is that course is still an agricultural economy and about 68% of the population are settled on land, and since there is pressure on land we are so much worried about every acre of land and every individual. Otherwise, we would not have laboured so much about this Bill. We will have, till our industrial development grows, this trouble about legislation on land, which we cannot help. But when we do so, when we deal with the chapter of determining relations on land, let us sit together and let us thrash out the problems.

Mr. Chairman : Since the hon. Minister will reply to the debate at 7 p.m., only 5 minutes can be given to each Member from now.

Several members rose in their seats....

Shri G. Sreeramulu : Mr. Chairman, Sir, I have been trying to speak on the Bill for the last 30 minutes.

شري کے۔ انت ریڈی:— مسٹر اسپیکر۔ اس بل کے تعلق سے جو بحث و مباحثت بیان ہو رہے ہیں وہ کچھ غلط تصورات لئے ہوئے ہیں۔ پہلے جو بل اس ہاؤز میں پیش کیا گیا تھا اگر اوس کو اور اس بل کو دیکھا جائے تو معلوم ہو گا کہ وہ بل ایک الگ نوشن (Notion) کے تحت پیش کیا گیا تھا۔ اور یہ بل ایک الگ نوشن (Notion) کے تحت پیش کیا گیا ہے اس لئے میں نے کہا ہے کہ اس کے پیچھے غلط تصورات کام کر رہے ہیں۔ پہلے بل میں وہ تفصیلات نہیں تھیں جو اس بل میں ہیں۔ اوس بل کا کلیر کٹ (Clear cut) یہ تھا کہ انعامداروں کے کچھ رائٹس (Rights) نہیں ہیں۔ اس وجہ سے انہوں نے اوس میں کمپنیشن کا جزو نہیں رکھا تھا۔ لیکن بعد میں جو انعامی بل آیا اوس میں یہ غلط تصوروں کے انعامداروں کے رائٹس ہیں۔ آریل ممبر فرام سکندر آباد نے کہا کہ انعامداروں کے رائٹس ہیں لیکن میں یہ کہوں گا کہ یہ غلط تصور ہے۔ وہ کونسرے محکمات ہیں اور وہ کونسرے عناصر ہیں جو اس بل کے لانے میں کام کئے اس کی ڈپٹی میں بھی جانے کی ہمیں ضرورت ہے کیوں کہ حکومتی طبقہ یہ چاہتا ہے کہ اوس کلاز کی تائید کرے جو رمایہ داری کا مکمل تہونہ ہے۔ میں یہ کہوں گا کہ حکومت اس بوانے بل کو واپس لینے پر مجبور کی گئی اور یہ نیا بل کمپنیشن دینے کی غرض سے لایا گیا ہے۔ تو یہ جو رائٹ نوشن ہے کمپنیشن وغیرہ دینے کا وہ باطل ہو جاتا ہے اگر ہم قانون عطیات کے ان جملہ استیجس کو دیکھیں۔ کیوں کہ انعام

جو پچھلے زمانہ میں راجہ مہا راجاؤں یا نظام کی جانب سے دئے گئے تھے وہ ایک "عطیہ" تھے۔ عطیہ اور عطا لہ کے جو تعلقات تھے ہم اوس کو پرایری جج نہیں کر رہے ہیں۔ ایک زمانہ میں نظام صاحب دورہ پر تشریف لے گئے۔ جنگل میں انہوں نے شکار کھیلا۔ کسی نے ان کی آوبیگت کی یا ایک حنگل کے چروا ہٹنے ان کی کچھ خدمت کی تو انہوں نے خوش ہو کر کہا مانگ کیا مانگتا ہے اور ہاتھ اٹھا کر بتلا یا تو وہ زمین اسے مل گئی۔ اس لئے انعام کا جو تصور ہے وہ چریٹی کا تصور ہے۔ اس میں لیتے والے کی مرضی کو کوئی دخل نہیں ہے۔ وہاں کوئی رائٹ پیدا نہیں ہوتے۔ لیکن اگر اس رائٹ کے تصور کو لیکر بل لایا جائے تو وہ بنیادی طور پر غلط ہوا۔ اور اس لحاظ سے کامپنیشن کا جو واپسلا چایا جا رہا ہے وہ غلط ہے۔ ہمیں بہ بتلانے کی کوشش کی جا رہی ہے کہ ہمیں کچھ نہ کچھ رائٹ ماننا ہی پڑیگا۔ اگر ہم کچھ نہ کچھ رائٹ مانیں گے تو ۶۰ پرسنٹ یا ۳۳ پرسنٹ معاوضہ کیوں۔ جب آپ تھوڑے رائٹ ماننے ہیں تو تھوڑا ہی کامپنیشن ہونا چاہئے۔ اس لئے کامپنیشن کا جزو حکومت نے مجبوراً رکھا ہے اور جب ہم پر اس قانون کو دیکھتے ہیں تو یہ واضح ہو جاتا ہے۔ ان چیزوں کو نظر انداز کر کے حکومت کے استاذ کو بجا قرار دینے کی جو کوشش کی جا رہی ہے۔ میں کہوں گا کہ وہ غلط تصور کے تحت ہے۔ ابھی ابھی ایک آنریل ممبر نے کہا کہ اگر ہم سرویس انعامس لینڈ جو ولیعس کے نیڑلی۔ بلوٹہ دار اور سیت سندھی انعام دینے ہیں اگر ان کو نکل دینے تو انہیں بھی کامپنیشن دینا پڑیگا۔ لیکن وہاں تو کامپنیشن کا سوال ہی نہیں ہے۔ نیڑلی سے آپ سرویس ۳۶ روپے انعام کے عوض لیتے ہیں۔ یہی کا غلط نوشن وہاں آگیا ہے۔ آپ اس کو معاوضہ دیتے ہیں.....

شروعی اسے۔ گرو ریڈی:۔ کم تنخواہ دیکر زیادہ کام لینے کا نام یئی ہے۔

شروعی کے۔ انت ریڈی:۔ تو سرویس کا جو جزو ہے آپ اس کے لحاظ سے تنخواہ مقرر کیجئے۔ میرا تو یہ تصور ہے کہ نیڑلی بلوٹہ دار اور سیت سندھی ملازمین۔ کی حیثیت رکھتے ہیں۔

They are expected to be Government servants.

They are deemed to be Government servants.

ان کو آپ تنخواہ مقرر کیجئے اور جو میگریبونریشن انعام کے طور پر دیا جاتا ہے وہ ختم کر دیجئے۔ یہ ہمارا ڈمانڈ ہے۔ اب یہ سوال کہ ان کو کامپنیشن دینے کا سوال پیدا ہوگا وہ نہ اٹھے تو ان کو آپ جو اراضی انعام میں دئے ہیں وہ ان کے نام پڑھ کر دیجئے اور خدمت کے بدلتے ان کو تنخواہ مقرر کر دیجئے۔ اب جو ۳۶ روپے انعام دیا جا رہا ہے۔ اس کے لحاظ سے ۳ روپے ماہانہ تنخواہ پڑی ہے۔

دوسری چیز جس کی جانب توجہ دلائی گئی وہ چار قسم کے لوگ ہیں۔ قابض قدیم پروٹکٹیڈ ٹینٹ - نان پروٹکٹیڈ ٹینٹ اور پر سینٹ ٹینٹ - ان میں ڈفرنشیٹ (Differentiate) اس طرح کیا گیا ہے کہ کامپنیشن کے معاملہ میں کچھ زیادہ پرہیز

() عائد کئے گئے ہیں - اس طرف سے ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ قابض قدیم کو بھی کیوں چھوڑنا چاہئے اور انکو پریمیس دینے پر مجبوب رکھیں چاہئے - اگر وہ آنریبل ممبر قابض قدیم کی تعریف کو بغور ملاحظہ فرماتے تو معادوم ہوتا کہ اس کی حیثیت متبادل ہے (Analogous to Pattedar and Shikmidar) وہ صرف پٹہ دار کو مالگزاری ادا کریا ہے ایسی صوات میں اسکی حیثیت بھی ایک پٹہ دار کی ہوئی ہے اور ہر سے یہ بحث کی جا رہی ہے کہ قابض قدیم سے جو برناوؤ کیا گیا ہے وہ بجا ہے لیکن کمپنیشن کا جو سوال اٹھایا گیا ہے وہ بنیادی طور پر غلط فہمی کی وجہ سے اٹھایا گیا ہے جیسا کہ میں نے کہا - اس تھوڑے سے رائٹ کو جسے آنریبل ممبر فرام سکندر آباد نے کنسید کیا وہ انتہائی سیگر ہینا چاہئے - وہ دو تین چار گناہ سے کسی صورت میں بھی زیاد نہ ہونا چاہئے - وقت کی قلت کی وجہ سے میں تفصیل سے نہیں کہہ سکتا

شی. گووی داران را (कंधार-आम) :— अनिमामी लैंडस मेरा राखिदस का तस्सवुर है।

شی. کے - انت ریڈی :— اس میں میں یہ کہہ رہا تھا کہ رائٹ اس وجہ سے نہیں ہے کہ وہ عطا کردہ زمینات ہیں - معطی لہ کا سمبندھ میں نے بتایا ہے - معطی لہ کی مرضی کو اس میں دخل نہیں ہے - اس لئے میں یہ عرض کروں گا کہ کمپنیشن کا جو جزو ہے اسکو نکال دیں -

* شری ادھو راؤ پٹیل (عنان آباد - عام) :— مسٹر اسپیکر سے میں یہ رکوست (Request) کروں گا کہ اور یہ مٹ تک ڈسکشن جاری رہے اور آنریبل منسٹر (H) منٹ میں جواب دیں کیونکہ اس بل کو اس طرف سے کافی ڈفت (Defend) کیا جا رہا ہے - ڈپٹی منسٹر فار ریونیو (شری بی۔ ہمنت راؤ) :— بھر سے جواب کے لئے وقت دیا گیا ہے -

مسٹر چیرمن :— وہ تو الٹ (Allot) کیا گیا ہے لیکن ممبر تقریر کرتا چاہئے ہیں -

شری ادھو راؤ پٹیل :— آنریبل منسٹر کو کافی موقع ملتا ہے - وہ آئندہ بھی امنڈ منٹ کے وقت جواب دیسکرے ہیں -

اسپیکر سر، انعام اپالیشن بل کی طرف دیکھنے کی دو نظریے ہو سکتے ہیں - الہاروں صدی کے جو طریقے ہیں ان کو ختم کرنے کے لئے یہ ایک قدم ہے - اس لئے میں اس کی تائید کرتا ہوں - اس بل کی ڈیٹیلز سے ظاہر ہوتا ہے کہ جو وسیع انٹریشن (Vested interests) تھے اور ان کے جو پریولیجس (Privileges) تھے انکو ختم کر رہے ہیں - لیکن کمپنیشن دینے کے لئے جس ڈھنگ سے بل پیش ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ ہمارے ایکٹ میں اور بھئی ایکٹ میں کافی فرق ہے - یہ حص ریونیو نہ دینا کوئی دلیل نہیں ہو سکتی - انعاموں کی ہستی دیکھی جائے تو اسکا اکسپلینیشن اس طرح ہو سکتا ہے کہ برائے زمانہ میں [ریونیو وصول کرنے کے لئے اتنا ایفیشنسٹ امنسٹریشن (Efficient administration)] نہ تھا اس لئے چند لوگوں سے یہ کہا گیا کہ آپ ریونیو وصول

کر کے دیجئے ہم اسکے صلہ میں آپکو یہ زمین دینگے - لیکن اب ان کے یہ فرائض نہیں رہے - اب اگر ایک کلکٹر یا منسٹر اپنے فرائض انجام نہ دے تو اسکے تبعخواہ جاری نہیں رہ سکتی - مادُرن اکوپنچس (Modern Equipments) کی وجہ سے آج اتنی ترقی ہوئی ہے کہ ہم ایک جگہ سے دوسری جگہ پر فوراً ہی جا سکتے ہیں - کسی گروپ کی صورت میں فوج بھیج سکتے ہیں لیکن قدیم زمانہ میں یہ نا ممکن تھا - اس لئے صوبہ داروں کو فوج بھی رکھنے کی اجازت دی گئی تھی - اسی طرح یہ روپینیو کا بھی معاملہ تھا - لیکن جب ہمارے پاس اس سمنٹ ہوا تو تمام اراضیات کے ساتھ انعام کی اراضیات کا بھی اس سمنٹ ہوا - اور انعامداروں کے فرائض نکال دئے گئے - لیکن انگریزوں کے زمانے میں وہ اسکو نہیں نکالنا چاہتے تھے اس لئے وہ بروش سامراج کی ایک ہالیسی تھی - انہیں سنہ ۱۸۵۷ء کا تجربہ تھا - راجہ مہاراجاؤں کو دکھ پہنچانے اور پرانے طریقوں کو بدلتے سے انہیں تقصیان پہنچنے کا اندیشہ تھا - رانی لکشمی کے متینی کا تصرفیہ نہ کرنے کی وجہ سے نہام راجاؤں نے ملکراپاک ہیجان برپا کیا تھا - اس لئے وہ کافی سبق حاصل کئے تھے - اگر سامراجی حکومت کو رکھنا ہے تو اسکے ساتھ ہی وسٹڈ انٹرسنس کو بھی رکھنا پڑیگا - اب سماجی حالات بدلتے چکرے ہیں اور یہ رائن (Rotten) تصور بھی ختم ہونا چاہئے - اب سوال یہ ہے کہ ہم بھی ایسا ہی ایسا ہی چاہتے ہیں لیکن ٹریزی پنچس کی جانب سے کہا جاتا ہے کہ آرٹیکل ۲۱ میں آٹے آتے آتا ہے - اگر اسکو غور سے پڑھا جائے تو معلوم ہوگا - روپینیو سب یہ لیا جاتا ہے - اس کا نسیٹیوشن میں آرٹیکل ۲۱ یہی ہے -

“Equal protection of Law”

کورٹ کے مامنے ایسے ناظر آئے ہیں کہ وہ روپینیو نہ دین اور اس سمنٹ لین تو اکوالیٹی نہ رہے گی - اس لئے اس کو رائٹ نہ تصور کرتے ہوئے بلکہ پریولیج قرار دیتے ہوئے اس کا تصرفیہ کیا جائے - یعنی انعام ایسا پر مینٹ رائٹ نہ تھا جو وراثتاً اسکو ملتا تھا اس لئے وہ پر اپرٹ رائٹ نہیں ہے - لیکن اس دوران میں در اصل کون مالک تھا - حقیقتاً حکومت اس کی مالک تھی اس وقت یہ کنسپشن (Conception) تھا کہ یہ حکومت کی اراضیات ہیں - اس لئے اس میں رائٹ تو پر اپرٹ (Right to property) نہیں ہے - میں مثال دیتا ہوں کہ آرٹیکل ۲۱ میں حکومت پر کوئی پابندی عائد کی گئی ہے - سب کلاز (۱) میں اس طرح کی پابندی ہے -

“No person shall be deprived of his property save by Law”

یعنی غیر قانونی طور پر کسی شخص کو اپنی جائیداد سے محروم نہ کیا جائے - قانوناً غیر جائز ہو تو لے سکتے ہیں - اس لئے سب کلاز ، اس کے آٹے نہیں آئے گا - سب کلاز میں لیجسلیچر پر جو پابندی عائد کی گئی ہے وہ اس طرح ہے -

“No property, movable or immovable, including any interest in, or in any company owning, any commercial or industrial undertaking, shall be taken possession of or acquired for public purpose..”

“Unless the Law provides for compensation for the property taken possession of or acquired and either fixes the amount of the compensation or specifies the principles on which, and the manner in which, the compensation is to be determined and given”.

() اگر اس جائزہ کو قبضہ میں لینا ہے تو پبلک پریزس (Public purposes) کی صورت میں لے سکتے ہیں۔ آپ تو انکے پاس سارے چار فیملی ہولڈنگ زمین رکھ رہے ہیں، آپ نہیں لے رہے ہیں بھر بھی آپ انہیں معاوضہ دیتے ہیں

شی. گورنمنٹ دارا و نارسینگارا و مورے - اینٹریسٹ سے ک्या پ্রیवیلیج نہ رہا ہوتا ؟

شری ادھو راؤ پئیل : ائرنسٹ یہی ہے کہ روینیو نہیں دیگا - یہی پریویلیج ہے۔ سکشن ۴۲ کے تحت کوئی پریویلیج نہیں رکھا جاسکتا۔ آپ اس کے لئے عطیات کے قانون کو ریل کر دیجئے۔ بمبئی میں اسی چیز کو دور کرنے کے لئے وہاں انعام ابالیش ہوتے۔ ہر سال انعام کی انہوں نے تعریف کرنے ہوئے بتایا کہ اس میں جا گیرات اراضیات اور نقد عطیات رہینگے۔ ابالش ہونے کے معنی یہ نہیں ہیں کہ گورنمنٹ میں وسٹ ہونگے۔ وسٹ ہوتے ہیں تو قبضہ لینے کا مفہوم آ جاتا ہے۔ آپ نے یہاں اس پر غور نہیں کیا۔ آپ انعامداروں کو سپریم کورٹ میں جانے دیتے۔ ٹرائیل کے طور پر یہ کرتے۔ لیکن حکومت جو انعامداروں کی ریزیٹیشن اور محافظہ اسنے ایسا کرنا مناسب نہیں سمجھا۔ وہ تو چاہتی ہے کہ جہاں تک ہوسکے انہیں فائدہ پہنچائے۔ بمبئی میں معاوضہ کس صورت میں دیا گیا وہ میں آپ کے سامنے رکھتا ہوں۔ کلاز (۱) کا سب کلاز (۲) یہ ہے

Section 5 (2) (a) An Inamdar in respect of the Inam land in his actual possession or in possession of a person holding from him other than an inferior holder, referred to in Clause (b) below, or

(b) an inferior holder holding Inam land on payment of annual assessment only, shall primarily be liable to the State Government for the payment of land revenue due in respect of such land held by him and shall be entitled to all the rights and shall be liable to all obligations in respect of such land as an occupant under the Code or the rules made thereunder or any other law for the time being in force.

بھی بمبئی کے قانون کا تجربہ ہے۔ وہاں میرے وشته داروں کے نام انعام ہیں۔ ایک جگہ سکشن (۲) میں لینڈ روینیو نہیں رکھا گیا ہے۔ لیکن ہم لینڈ روینیو کو نکالتے ہیں۔ سب کلاز ۲ بی میں ایسے رول بنائے ہیں کہ اگر کسی کو رائیٹس ہوتا ہے تو وہ سکس ٹائمس روینیو (Six times revenue) خزانہ میں داخل کرتا ہے۔ اگر حکومت چاہتی تو دوسرت ہاتھ سے کمپنیزیشن نکال سکتی تھی جبکہ آپ ان کو

مستقل مالک بنارہے ہیں۔ آپ انہیں کیوں مفت میں دیدینے ہیں۔ آپ نے اس جائزہ کا معاوضہ دیا جائزہ آپ کی ہو گئی۔ جب آپ منتقل کر رہے ہیں تو آپ کو قیمت کا تعین کرنے کا اختیار ہے۔ بمبئی گورنمنٹ نے یہ رکھا کہ روپوینیو کا چھ گونا داخل کریں۔ آپ اس طرح ۳۱ کو صفائی کے ساتھ اوائیڈ کرسکتے تھے۔ سکشن (۶) میں یہ ہے کہ

Section 6. Notwithstanding anything contained in any law, usage, settlement, grant compensation, sanad or order but subject to the provisions of this Act, a sum equal to seven times the amount of cash allowance referred to in section 2 (1) (e) (ii), if any, due to an Inamdar as personal Inam shall be paid to him as compensation in consideration of the extinguishment of his right to receive such allowance.

حکومت کو اس سے کوئی مفاد حاصل نہیں ہے۔ مفاد اس معنی میں کہ اس کے سامنے فائیو ایر پلان ہے۔ اور آپ انہیں کافی معاوضہ ادا کر رہے ہیں۔ ایسی غلط ڈرافنگ کی گئی ہے کہ اس کا کل انٹرست تو گورنمنٹ میں وسٹ ہو گا۔ ڈپریویشن (Deprivation) جو ہوتا ہے وہ دو طریق سے ہوتا ہے ایک تو ڈسٹرکشن (Destruction) اور دوسرے کانفسکیشن (Confiscation) آپ گیٹنگ پوزیشن آر ایکویزیشن (Getting position or acquisition) نہیں کرتے۔ انکو جو پریولیج دیا گیا ہے وہ بتکرتے ہیں۔ اس لحاظ سے آپ کا پوزیشن اسٹرانگ (Strong) تھا۔ اور آپ سپریم کورٹ میں بھی اسی کو رپریٹ (Represent) کرسکتے تھے۔ لیکن ایسا نہیں کیا جاتا اور کہا جاتا ہے کہ اپوزیشن تو سے حکومت پرچار جن ہی لگاتی ہے۔ مگر آپ اسپر غور کریجئے۔ سکشن (۳۱) کا میں جو انٹرپریٹیشن (Interpretation) کر رہا ہوں وہ ہو سکتا تھا۔

[Shri Anna Rao Ganmukhi (Chairman) in the Chair]

اسکرے بعد رلیجس انسٹی ٹیوشن (Religious Institution) کے انعامات بجال رکھنے کی کیا وجہ ہے۔ ہاں انگریز دور حکومت میں انکا نظریہ یہ تھا کہ یہاں کے لوگوں کے رلیجس معاملات میں دخل نہ دیا جائے کیونکہ یہاں کے لوگ زیادہ مذہبی ہیں اور اگر انکے معاملات میں دخل دیا جائے تو سخت مخالفت ہو گی۔ اور انہیں برقار رکھ کر وہ اکسپلائٹیشن (Exploitation) کرنا چاہیے تھے۔ انہوں نے کیا اور وہ واجی تھا۔ لیکن آج تو وہ حالت نہیں ہے۔ رلیجس معاملات پر کئی لیجس لیشن پاس ہو چکے ہیں۔ ہندو و یمنس رائیٹ ٹو پرائی ایکٹ (Hindu Womens Right to Property Act) شری چیرمن:— انڈومنشن ایکٹ ہے۔

شری ادھو راؤ پشیل:— ہاں۔ انہیں کیوں رکھا گیا۔ اس طرح برقار رکھنے سے کیا آپ کی سیکولر گورنمنٹ میں مشکلات نہیں پیدا ہونگی۔ اور پھر دیکھئے کہ ان

انعامات کا کیا حشر ہو رہا ہے ؟ ان سے کیا خدمت ہورہی ہے - میں جانتا ہوں کہ جو مفہوم تھی ہیں انکا کیا حال ہے - وہاں برائیوں کے اڈے ہیں -

بس یہی کہ وہ شادی نہیں کرتے مگر سب کچھ ہوتا ہے - بلکہ میں یہاں تک کہونگا کہ انکی حالت ہندو دھرم کے لئے ایک کلنک ہے - انکا وجود میں بے عنق سمجھتا ہوں - لیکن آپ ان کے لئے برقرار رکھتے ہیں - جس انڈومنٹ ایکٹ کا رفرنس دیا گیا ہے اس میں انہیں ٹینٹس سے بالا تر رکھتے ہیں - ایسے کیسیں ہیں کہ مفہوم پتی کوشش بھی نہیں کرتے تھے آپ اس کا دس گونا روپینیو رنٹ وصول کرتے ہیں - خیر میں اس تفصیل میں جانا نہیں چاہتا - میسور میں بھی اسی لئے اس چیز کو سلکٹ کمیٹی کے تفویض کیا گیا - وقت کی کمی کے لحاظ سے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

Mr. Chairman : Only 2 to 3 minutes will be allotted for the hon. Member.

Shri Devisiugh Chauhan (Ausa) : In view of the time given to other hon. Members, I expect that I would be given at least ten minutes.

Mr. Chairman : The time appointed for the Minister's reply was 7 O'clock and it is already past 7 p.m. Anyhow, five minutes' time is allowed to the hon. Member.

Shri Devisingh Chauhan : I think it would be very difficult to express within such a short time on many points raised during the debate.

Mr. Chairman : The hon. Member can summarise his points.

Shri Devisingh Chauhan : The Inam Bill has a long history behind it. The Ministry representative of this Assembly was constituted on 6th March, 1952. Only a day before that date viz., on 5th March, 1952 the Inams Enfranchisement Act was enforced. As the representatives of the people were feeling that the said Act should be revised, another Bill, was brought before this House. The principles incorporated in the new Bill were the same as in the old Act. The Act of 1952 was Enfranchisement of Inams Bill; and the new Bill also was the Enfranchisement of Inams in the State. It was however felt that simple enfranchisement would not be sufficient but abolition should be undertaken and the rights of the tenants should be protected. Therefore this Bill has been brought before this House. I congratulate the Government for accepting these principles and the necessity for incorporating these principles therein. The aims and objects of the Bill have been set out in the Statement of Objects

and Reasons. I would just draw the attention of the House to those aims and objects.

The present Bill intends abolition of all inams excepting religious and service inams. Next, it provides for full assessment being charged for such abolished inams. Under the first Act, only 1/8th of the land assessment or jodi was envisaged to be charged ; under the new Bill full assessment was charged ; and under the present Bill also full assessment was sought to be levied on the Inamdar. The most important consideration for bringing this Bill is the retention by the Inamdar as well as the tenants of lands under their personal cultivation. The Act and the subsequent Bill which was withdrawn did not envisage to retain the possession of the tenants of lands which they were cultivating for so many years. The present Bill before the House accepts this principle. It should therefore be clear to the hon. Members that by accepting this Bill the House will provide to retain the possession or the occupancy rights of tenants in respect of Inam lands.

Mr. Chairman : There is not much time. I therefore request the hon. Member to cut short his speech.

Shri Devisingh Chauhan : I request the Chairman to give me at least 5 or 10 minutes.

Mr. Chairman : Only 5 minutes.

Shri Devisingh Chauhan : As there is no time and as I am pressed to curtail my speech, I shall only just refer to some of the points.

My first point is about the Statement of Objects and Reasons. What appears to me to be untenable is the following sentence appearing in the Statement of Objects and Reasons :

“Further the Act is likely to be challenged as being discretionary,”

This refers to the Act of 1952. That Act tried to levy only 1/8th of the land assessment on the Inamdar, and patta rights were given to them. At that time, Government might have taken counsel from the Legal Adviser. At the time of drafting the previous Bill, also, legal advice was obtained, and, I think, Government might have been fully satisfied that the existing Act of 1952, or the Bill which was withdrawn, in 1953—both of these pieces of legislations—were

fully valid, if full assessment was charged to the Inamdar and patta were given to them. So, the Act of 1952 as also the Bill which was withdrawn were not discretionary. Under the circumstances, the sentence quoted by me above from the Statement of Objects and Reasons, I feel, is unnecessary.

One departure has been made in this Bill, i.e., the Bill seeks to give some compensation to the Inamdar. The reason for giving compensation is that we are taking Inam lands from the Inamdar and making the patta of these lands in the name of the tenants (*Interruptions from Several Opposition Members*).

شري ادھو راؤ پئيل:— ان کے لئے ساڑھے چار فیملی ہولڈنگ چھوڑی جا رہی ہے۔

Shri Devisingh Chauhan: I am sorry, I cannot go into details, because the time at my disposal is very short. It cannot be said that the enactment which was enforced after the promulgation of the Constitution was on faulty grounds. The compensation proposed under this Bill is on quite different grounds. Therefore, the sentence quoted by me should not be there in the Statement of Objects and Reasons.

The object underlying this Bill, viz., that the inamdar and the tenants on the inam lands should retain their lands, is quite laudable, and I congratulate the Government on this. But when we go through the provisions of the Bill, the same object has, I am afraid, been relegated to the back-ground. Because, when the question of giving patta rights to the inamdar is considered in section 4, in spite of the fact that Inamdar may have patta of a large number of acreage in their name which they cannot resume under the existing Tenancy and Agricultural Lands Act, still an attempt is being made under section 4 to give some more land from the Inam lands to the Inamdar. I admit that by this provision, the actual possession of the inamdar is not disturbed. The possession will be with the tenants, but still, patta rights would be given to the Inamdar and the consequential effect upon the tenants would be the application of Section 44 of the Tenancy Act. By this procedure, the Inamdar gets the right of disturbing the possession of tenants. Therefore, I submit, that this provision of giving patta rights to the Inamdar in addition to the patta lands which he holds, indirectly goes against the objects which have been apparent in this legislation. I would request the Member in charge of this Bill to reconsider the issue.

Similarly, the scope of the word "Inamdar" has been greatly increased. The main object of reconsidering the existing Inam law was simply to protect the rights of the tenants. But here, an attempt has been made to widen the scope of the definition of the word "Inamdar". Formerly, the word "Inamdar" simply meant a person who holds Inam land. Under the revised definition, "Inamdar" means a person holding an inam or a sharer therein, either for his own benefit or in trust and includes the successor in interest of an Inamdar and, where an Inamdar is a minor or of unsound mind or an idiot, his lawful guardian and where an Inamdar is a Member of a joint Hindu family, such joint Hindu family. "Inamdar means a person holding an Inam"—this is the old part of the definition. The subsequent words have been added to them. So, the definition of the word "Inamdar" has been greatly widened, and when the question of allotting patta rights to the Inam-dars would come, then, though the Inamdar may be one single person, yet, some 5, 10 or 15 sharers in the Inam lands may come forward and claim that they also are entitled to get $4\frac{1}{2}$ times the family holding of patta on their names.

Mr. Chairman : A person can be interpreted to mean only one person.

Shri Devisingh Chauhan : May be, Sir. By widening the definition of Inamdar, we are simply creating more scope for depriving the tenants of their patta rights and giving more advantage to the Inamdars. I would strongly plead that the original definition of "Inamdar" which had been accepted in the Atiyat Act, the Act of 1952 and also in the Bill which was withdrawn in 1953 should be retained, and that we should not make any attempt to widen the scope of the definition, which could only lead to the deprivation of the rights of the tenants.

I would like to invite the attention of the House to section 8 where non-protected tenants are given the patta rights. The protected tenant has been defined as one who has been declared protected under the sections of Tenancy and Agricultural Lands Act. But here, it has been provided that a tenant who has obtained possession of land after 10th June, 1950, would not be entitled to any patta right. So; I would invite the attention of hon. Member in charge to the repugnancy or conflict between the definitions of a protected tenant and a non protected tenant. This conflict should be removed.

Mr. Chairman : Difference between the Tenancy Act, and this Act :

Shri Devisingh Chauhan : In this very Act, itself, a protected has been defined as a person who is declared a protected tenant under the provisions of the Tenancy Act.

شری کے - وی - رنگ ریندی : - کیا جواب کے لئے وقت بڑھایا جائیگا -

سستر چیرمن : - اگر ضرورت ہو تو بڑھایا جائیگا -

Shri Devisingh Chauhan : So, a protected tenant can become a protected tenant after retaining his possessions for one year, after 10th June, 1950. That is, if he retained his possession up to June 1951, he becomes a protected tenant. But under section 8, it has been provided that a person who obtains the possession of the Inam land after June, 1950 would not be entitled to patta rights. So, there is....

Mr. Chairman : This can be dealt with when the amendments to the relevant clauses are taken up.

Shri Devisingh Chauhan : Mr. Chairman, Sir. If your suggestion is fulfilled, then my argument will not have been in vain.

I want to say a word about compensation. Without going into the merits and the amount of compensation, I would just draw the attention of the hon. Member-in-charge of the Bill to the compensation which has been provided for kabiz-e-kadim, tenants. They give only land revenue to the Inam-dars. The Inam-dars, under these conditions, are entitled only to land assessment. But here, when patta rights are being given to the Inamdar, then, even he is entitled to compensation under section 12. This is not correct, because, under the old Act or the Bill withdrawn, simply full assessment was charged and no compensation was paid. This was quite valid and unassailable. It cannot be assailed on legal or constitutional grounds. Therefore, it is unnecessary to provide any compensation to the Inamdar when the patta rights of his land have been given to him.

I would now like to draw the attention of the House to one general aspect. The hon. Member from Osmanabad referred to section 31 of the Constitution as applicable to all the property under the Inam Bill. I would like to submit that

that is not so. The Constitution has been amended in 1951, and for dealing with Estates, section 31-A, has been particularly incorporated in the Constitution. Section 31-A, lays down that if an Estate has been taken possession of by the Government without providing any compensation, even, in those circumstances, the legislation cannot be quite assailed, provided it gets the assent of the President. Under the Inam Bill, if all the Inams were vested in the Government and no compensation were provided ; and the assent of the President is obtained, then it would mean a very valid piece of legislation. It cannot be challenged. It does not attract any other provisions of the Constitution, making this piece of legislation invalid or void. But, in providing compensation under this Bill, it is the intention of the Government that a certain section of the agriculturists who were enjoing some income from agriculture should not be at a moment's notice disturbed ; they should get some other occupation or source of income. So, compensation has been provided. That is the intention. The same object could have been attained if rehabilitation grants were given. It was not necessary to provide compensation. In a way, we are simply providing some means to certain sections of the community to adopt other professions. We don't want to disturb them immediately and leave them without any means of livelihood at this moment.

شری گرو رینڈی : — گدوال اور ونپری کے راجہ صاحب کو بھی تو آپ دے رہے ہیں۔

Shri Devsingh Chauhan : Without going into individual cases which the hon. Member wants me to do, I will only discuss the general nature of the problem.

مسٹر چیر من : — اب ساڑھے سات بج چکے ہیں اسائی آپکو وقت نہیں مل سکتا ورنہ
اسکو کل پر رکھنا پڑیگا ۔

Shri Devisingh Chauhan : So, the time at my disposal is over, and without taking more time of the House, I would request the hon. Member in charge of the Bill to bring in some amendments, so that this legislation will be of real benefit to the tenants.

The main object of reconsidering the Inams Abolition Bill is simply to protect the rights of the tenants. Whatever is necessary for the protection of the rights of the tenants on these inam lands should be done. Whether it is the definition of the 'Inamdar', whether it is the issue of compensation,

or whether it is the question of giving patta rights to the Inamdar and also the tenants, all these questions should be reconsidered, and I think with these small adjustments this legislation would be very healthy and very progressive.

Some Members of the House have referred to Bombay legislation. I can make myself bold enough to say that our Bill is far more progressive and advanced than the Bombay legislation. The Bombay legislation is simply an Enfranchisement Act. Ours deals with the abolition of Inams. The Bombay Act, does not take into consideration the rights of the tenants on these Inam lands ; our purpose in bringing this Bill before this House is to protect the rights of the tenants on the Inam lands. Not only are we protecting their rights, but we are giving patta rights to them. We may charge some compensation, but it is immaterial because we are giving patta rights to the tenants.

I once again congratulate the Government for bringing before this House an advanced and progressive piece of legislation for the protection of the rights of Inam tenants.

Shri A. Gurva Reddy : Mr. Chairman, Sir, If the hon. Minister takes more than 30 minutes to reply he may be given time for that purpose tomorrow.

مسٹر چیرمن : کیا آپ آدھے گھٹئے میں اپنی تقریر ختم کریں گے۔

شری کے۔ وی۔ رنگاریڈی : مجھے تو ایک گھٹئہ دیا کیا تھا اسپیکر صاحب نے کہا تھا کہ یہ بھی سے میں جواب دوں۔ چونکہ مبرس نے اسی پس دینے پر اصرار کیا تھا اس لئے ثانی بڑھ گیا۔ اگر ساڑھے آئھے تک ثانی دیا جائے تو اچھا ہے ورنہ میں آدھے گھٹئے میں ختم کرنے کی کوشش کروں گا۔

مسٹر اسپیکر سر : کونسے الفاظ کس دفعہ میں رکھنا چاہئے یا کونسی ترمیم کونسے دفعات میں ہوں چاہئے اس بحث کی یہ نوبت نہیں ہے۔ عام طور پر یہاں توصیف ہم کو قانون کے وضع شدہ دفعات کے منشاء پر ہی بحث کرنی چاہئے۔ اس لئے میں ہر چیز کا علحدہ علحدہ جواب نہیں دوں گا بلکہ مجموعی طور پر جواب دینے پر اکتفا کروں گا۔

اس قانون پر صحیح رائے رکھنے کے لئے اس بات کی ضرورت ہے کہ ہم یہ صحیح طور پر سمجھیں کہ اراضی انعام در اصل کیا چیز ہے۔ بعض مباحث سترے کے بعد میں اس نتیجہ پر پہنچا ہوں کہ اراضی انعام کے صحیح مفہوم پر غور ہی نہیں کیا گیا۔ اگر اراضی انعام کا مفہوم اچھی طرح سمجھ لیا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ جتنے مباحث ہوئے ہیں اون میں کے آدھے مباحث خود بہ خود ختم ہو جائے ہیں۔ اس لئے

میں سب سے پہلے اراضی انعام کے اصل مفہوم کو واضح کرنا چاہتا ہوں۔ جو اراضیات بے تعلق عطیات ہوتے ہیں ان کو ہم نے انضام کے قوانین کے اغراض سے لئے دو حصوں میں تقسیم کیا ہے۔ جہاں تک ”موضع“، کا تعلق ہے اوسے جاگیر کی تعریف میں داخل کیا ہے۔ خواہ وہ اگر ہارہو اصلی یا مکاسا یا اور کچھ اور ایسی جاگیریں اپالیشن آف جاگیرس کے ساتھ ہی ختم ہو گئیں۔ لیکن جہاں موضع نہیں صرف اراضی ہے تو اوس کو ہم انعام کی تعریف میں لے رہے ہیں۔ اور اوسی کو ہم ختم کرنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ اراضی انعام میں مقطعہ خواہ وہ مشروط الخدمت ہو یا غیر مشروط الخدمت ہو۔ بالمقابلہ ہو یا بلا مقطعہ وغیرہ یہ جملہ اراضیات عطیہ اراضی انعام کی تعریف میں داخل ہیں۔ جاگیرات میں معطی لہ کو صرف محاصل سے استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ہے۔ اون کے استاد میں یہ چیز لکھ دی جانی ہے۔ اور پیش ٹھواریوں - دیشمکھوں اور عام رعایا کو یہ بتایا جاتا ہے کہ فلاں جاگیر فلاں کو دی گئی ہے آئندہ وہ اس کے محاصل سے استفادہ کریگا اراضی میں کوئی حقیقت اوس کی نہیں دیے گئی۔ اس لئے اپالیشن آف جاگیرس کے پہلے اور اوس کے بعد بھی یہ احکام دئے گئے تھے کہ کوئی جاگیر دار اپنی جاگیر میں کسی اراضی کا اپنے نام بیٹھ نہیں کرسکتا۔ اس میں استثنیا یہ رکھا گیا تھا کہ وہ ذاتی کاشت کی حد تک پڑھ کر سکتا ہے۔ بخلاف اس کے اراضی انعام کی صورت مختلف ہے۔ انعام میں محاصل سے استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ہے اور قبضہ کے حقوق سے بھی استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ہے۔ آپ یہ کہہ رہے ہیں کہ چون کہ انعام دار کو قبضہ منتقل کرنے کا حق دیا گیا ہے اس لئے اوس کو معاوضہ نہیں دینا چاہئے۔ آپ یہ سمجھ رہے ہیں کہ اوس کو صرف محاصل سے استفادہ کرنے کا حق دیا گیا ہے۔ اس تصور کی بنا پر اس قانون پر غور کیا جا رہا ہے جو ایک بنیادی غلطی ہے۔ انعام دار کو جیسا کہ میں نے کہا بلہ ادائی محاصل سرکار اراضی استفادہ کرنے کا حق حاصل ہے۔ خواہ زمین خود کاشت کرے یا قول پر دے۔ بجز اس کے کہ اوس کے انعام میں کوئی حصہ مقرر کیا گیا ہو۔ اس سے ظاہر ہے کہ محاصل سے استفادہ کرنے کے علاوہ اراضی دوسرے کو دینے یا اپنے استفادہ کیلئے رکھنے کا حق بھی حاصل ہے۔ بعض سماحت سے معلوم ہو رہا ہے کہ بعض لوگ یہ تصور کر رہے تھے کہ حق انتقال انعام دار کو نہیں اس میں شک نہیں زبانہ سابق میں جو فرمائیں جاری ہوئے تھے اوس کے تحت بیع یا رہن کرنے کا اختیار نہیں تھا۔ اوس وقت یہ طریقہ کیا گیا تھا کہ انعام دار اپنے حقوق کو منتقل نہ کرے۔ لیکن ۱۸ فصلی میں ایک حکم کے ذریعہ اس کی وضاحت کی گئی۔ میں وہ حکم ابھی آپ کو پڑھ کر سناؤں نگا۔ اس کے ذریعہ حکم دیا گیا ہے کہ انتقال معاش پر جو امتیاز عائد کیا گیا ہے اوس کا منشا یہ نہیں کہ کوئی شخص اس اراضی کا حق مقایضت دوسرے کو نہ دے۔ اس اراضی پر وہ دوسرے کو پڑھ دار بن سکتا ہے۔ اور بد تقریر پن اور نزول پر دے سکتا ہے۔ جو مانعت منتقلی کی ہے وہ حق انعام سے ہے۔ حق قبضہ یا حق پڑھ کی منتقلی سے یہ احکام متعلق نہیں ہیں۔ یہ آج کا حکم نہیں ہے بلکہ ۱۸ فروری کا ہے اگر ہم اس کو مان لیں تو یہ تسلیم کرنا پڑیگا کہ انعام دار کے دو حقوق میں سے ایک حق کی منتقلی پر امتیاز

عائد ہے۔ لیکن دوسرے حقوق یعنے حقوق قبضہ یا انتقال پر امتناع نہیں ہے۔ اگر یہ تسلیم کر لیا جائے تو تمام مباحث خرد بخود ختم ہو جاتے ہیں۔ وہ حکم میں پڑھ کرستاتا ہوں۔

..... انعامدار کو جن کی اراضی یہ حکم بحالی دوام تصفیہ پاچکی ہے ضرور یہ حق حاصل ہے کہ وہ اپنی اراضی یہ تقریز بن کاشت پر دین تعیر امکنہ کے لئے پٹہ پر دین یا خود اوس میں کاشت کریں یا مکان بنائیں مہانت نہیں ہے۔ بیع، بہن، ہبہ عطیہ شاہی کو اس صورت سے بالکل تعلق نہیں ہے۔ یہ تعین بن پٹہ پر دینا داخل انتقال ملکیت نہیں ہے، ۷۸.....

یہ صراحة سنہ ۱۸۸۱ میں ہوئی ہے اور اس سے صاف ظاہر ہو گا کہ انعامدار آراضی پٹہ پر دے سکتا ہے۔ ایسا حق پٹہ قانون مالگزاری کے تحت قابل توریث ہے۔ اگر کوئی رائے شخص مر جائے تو اوس کے ورثاً کو اوس کا حق پہنچتا ہے اور وہ اوسکو رہن یا بیع کر سکتے ہیں۔

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ (بھوکردن۔ عام) :- میرا خیال یہ ہے کہ پٹہ یہ معنی قول استعمال ہوا ہے نہ کہ یہ معنی حقوق۔

شری کے۔ وینکٹ رنگا ریدی :- مال کے قانون میں ایسا نہیں ہے البتہ دیوانی قانون میں پٹہ اور قول متعدد الفاظ ہیں۔ قانون مال میں پٹہ اور چیز ہے اور قول اور چیز۔ قول مدتی بھی ہوا کرتا ہے لیکن پٹہ مدتی نہیں ہوتا۔

شری کے۔ انت ریدی :- کیا یہ بتایا جاسکتا ہے کہ ایسی کتنی اراضیات ہیں جو اس طرح پٹہ کی ہیں؟

شری کٹھ رام ریدی (نلگنڈہ۔ عام) :- صرف راست مالگزاری ادا کرنے کا حق ہے اور کوئی حق نہیں ہے۔

شری کے۔ وینکٹ رنگا ریدی۔ آپ اس کے متعلق سوال پوچھیں تو میں مواد منگوا کر کوئی سچن اور (Question Hour) میں اس کا جواب دونگا۔ اس وقت میں آپ کو مواد فراہم نہیں کر سکتا۔ یہاں تو صرف میں آپ کو قانون بتا رہا ہوں اس کو مان لینا چاہتے۔ اگر یہ غلط ہے یا یہ قانون منسوخ ہو گیا ہے تو آپ اوسکی تردید کیجیسے۔ آپ یہ کہ اس قانون پر عمل نہیں ہو رہا ہے تو یہ اور بات ہے۔ میں نے خود آج سے (۲۰۰۳) سال قبل بذریعہ رجسٹری انعامدار سے پٹہ حاصل کیا ہوں وہ زین اس وقت میرے قبضہ میں موجود ہے۔ میں نے اوس میں باغ لگایا ہے۔ میں آپ کو اوسکی رجسٹری بھی بتا سکتا ہوں۔

شری ادھورا ڈیلیل :- آپ نے جو اراضی حاصل کی کیا اوس کا اسسمنٹ بھی ہوا ہے؟

شری کے۔ وینکٹ رنگاریدی۔ غرض میں یہ کہونگا کہ حق پٹہ علحدہ ہے اور حق انعام

علحدہ ہے۔ اگر اس کو مان لیں تو پھر میرے لئے باقی چیزوں کا جواب دینا آسان ہو جائیگا۔ میں اس کے بعد یکرے اعترافات کا جواب دونگا۔ سب سے پہلے یہ اعتراض کیا گیا ہے کہ اس قانون کو فوراً نافذ کرنا چاہئے اور کوئی تاریخ نفاذ مقرر کرنے کا اختیار گورنمنٹ کو نہیں دینا چاہئے۔ میں آپ سے یہ کہونگا کہ آپ تو اس کو فوراً نافذ کرانا چاہتے ہیں اور میں یہ چاہتا ہوں کہ فوراً سے بھی پہلے یہ قانون نافذ ہو جائے۔ ایکن بات یہ ہے کہ ہمکو محض الفاظ پر غور نہیں کرنا چاہئے بلکہ دیکھنا یہ ہے کہ آیا فوراً نافذ کرنے پر عمل کرنا سکن ہو سکتا ہے یا نہیں۔ اس بل کے دفعات کے لحاظ سے قواعد بھی بنانا پڑیگا۔ اس میں بہت سے امور کی تحقیقات کرنی پڑیگی۔ یہ چیزیں کرنے کے بعد ہی قانون قابل عمل ہوگا۔ اس کے بغیر نہیں یعنی قابض کو پٹھے دینے کا حکم دیا گیا ہے لیکن پٹھے کی تحقیقات ہونا اور طریقہ تحقیقات کا معین کرنا وغیرہ یہ چیزیں باقی ہیں۔ ان چیزوں کے متعلق قواعد بننے کے بعد ہی اوس پر عمل ہوگا۔ فوراً نافذ کرنے کے الفاظ اسواستے نہیں لکھے گئے۔ اس لئے آپ کا اصرار کہ فوراً نافذ ہو کوئی اصولی چیز نہیں ہو گی۔ فوراً نافذ کرنے کے احکام اوسی وقت دے سکتے ہیں جب ان تمام باتوں کی تصفیہ کی ضرورت نہیں۔ اس میں مجھے اعتراض نہ ہوگا لیکن یہ سمجھا جائیگا کہ ہم نے سچے سمجھہ کر قانون نہیں بنایا۔ عمل کب ہو سکتا ہے اس کا خیال نہیں رکھا۔ یونہی تاریخ نفاذ مقرر کر دیگئی۔

معاوضہ کے متعلق بہت کچھ رائے نہیں کی گئی ہے۔ کوئی صاحب کہتے ہیں کہ معاوضہ نہ دینا چاہئے اور کوئی صاحب کہتے ہیں کہ معاوضہ دینا چاہئے۔ یہ کہا جا رہا ہے کہ مالگزاری کی بنا پر دینا چاہئے اور یہ بھی کہا جا رہا ہے کہ منافہ کی بنا پر دینا چاہئے۔ زیادہ دینا چاہئے۔ کم دینا چاہئے کیونکہ یہ عطا ہے اور بادشاہ وقت کو جب چاہے اسے واپس لینے کا اختیار تھا اس لئے اس کو معاوضہ دینے کی ضرورت نہیں وغیرہ وغیرہ۔ اگر دستور کے لحاظ سے ہم معاوضہ دینے سے بچ سکتے ہیں تو میں آپ صاحبین میں پہلا شخص ہونگا کہ بغیر معاوضہ دینے سے انعامات برخاست کروں۔ آپ صاحبین کو یاد ہو گا کہ مناصب وغیرہ کی برخاستگی کے قانون کے وقت بھی یہ مسائل آئئے تھے لیکن اسوقت اس پر لحاظ نہیں کیا گیا۔ وہ مسئلہ بالآخر ہائیکووٹ میں گیا۔ وہاں اوس مسئلہ پر بحث ہوئی اور وہ زیر تجویز ہے۔ مجھے اندیشہ ہے کہ وہ دستور کے خلاف ہونے کی وجہ سے ختم ہو جائے۔ اس لئے ہمیں قانون سچے سمجھہ کر دستور کو پیش نظر رکھتے ہوئے بنانا چاہئے تاکہ بکوڑ آف لا میں چیالیج کیا جائے تو چیالیج نہ ہو سکے ورنہ میں سمجھتا ہوں کہ یہ اتنی معمولی غلطی نہ ہو گی جسکو نظر انداز کیا جا سکے اس لئے تفصیلی جوابات دینے کے بجائے میں یہ سب اعتراضات کا جواب سمجھوں گا۔ اگر دستور اجازت دے تو ہم معاوضہ نہ دینگے لیکن میں سمجھتا ہوں کہ دستور کہتا ہے کہ مตقولہ اور غیر مतقولہ جائز ہی کا سوال نہیں ہے.....

شروع کے۔ ایل۔ نرسماہاراؤ۔ پریسیڈنٹ کی رضامندی حاصل ہو جائے تو معاوضہ

دینا نہیں پڑتا جیسا کہ دیوی سنگھ صاحب چوہان کہہ رہے تھے ۔ اس بارے میں آپ کی رائے کیا ہے ۔

مسٹر چیر من :- حکومت جیسی ضرورت سمجھتی ہے ویسا جواب دیر ہے ہیں ۔
 شری کے ۔ وی ۔ رنگاریڈی :- میں اسکو تسلیم نہیں کرتا ۔ دستور کے لحاظ سے معاوضہ دینا ضروری ہے ۔ بعض صورتوں میں پریسیدنٹ کی اجازت سے عذر رفع ہو جاتا ہے لیکن ہر صورت میں نہیں ہوتا ۔ جیسا کہ میں کہہ رہا تھا جائیداد کے معاوضہ ہی کا سوال نہیں ہے ۔ اب جبکہ دستور اجازت نہیں دیتا ہے تو ہمیں یہ دیکھنا ہو گا کہ ہم کس قسم کا معاوضہ دینگے ۔ ہمیں دو قسم کا معاوضہ دینا ہو گا یعنی ایک تو اراضی سے استفادہ کا جو حق تھا اسکا معاوضہ دینا ہو گا اور دوسرا خود کاشت نہ کرنے ہوئے زرمالگزاری سے زیادہ معاوضہ لینے کا جو حق تھا اسکا بھی معاوضہ دینا ہو گا ۔ معاوضہ مشخص کرنے کے لئے وقت ہماری نظر ان دونوں پیلوں پر ہون چاہئے ۔ ہم جب انعامدار کا حق انعام ختم کرو رہے ہیں تو ہم اسکے قبضہ کو نہیں دیکھنے گے بلکہ اسکے استفادہ آمدنی کے حق کو دیکھنے گے خواہ وہ ذات سے کاشت کر رہا ہو یا نہ کر رہا ہو کیونکہ سرکار کو مالگزاری دئے بغیر اسکو استفادہ آمدنی کا حق ہے ۔ اگر اسکو وہ پٹہ پر دیتا ہے تو وہ پٹہ دار قابض کے مہائل ہو جاؤ یہاں اسکے انعامدار کو بلا لحاظ قبضہ کے اسکا جستقدر انعام کا رقمہ ہے اسکا معاوضہ تابجد حق انعام دینا پڑیگا ۔

ہم نے اراضی انعام کے قابضین کو معاوضہ کے اغراض کیلئے کو چار اقسام میں تقسیم کیا ہے ۔ قابض قدیم ۔ محفوظ قولدار ۔ غیر محفوظ قولدار اور مستقل قولدار ۔ قابض قدیم کے متعلق بہت سے صاحبین نے اعتراض کیا ہے ۔ اسکی نسبت ترمیمات پیش ہونگی تو ترمیمات کی نوبت پر میں جو مناسب ترمیم سمجھوں گا اسے قبول کروں گا ۔
 شری پنڈم واسدیو (گجویل) :- آپکی رائے میں دو طرح کے معاوضے دینا طے ہے ۔
 دستور ہند کی رائے میں کیا ہے ؟

شری کے ۔ وی ۔ رنگاریڈی :- آرٹیکل ۱ ملاحظہ فرمائیں ۔ اسکے الفاظ کے لحاظ سے جائیداد منقولہ یا غیر منقولہ یا اوسکا کوئی حق بھی لبنا چاہتے ہیں تو اسکا بھی معاوضہ دینا ہو گا ۔ اگر بلا ادائی معاوضہ اراضی کی آمدنی سے استفادہ حاصل کرنے کا حق ہے تو وہ حق جائیداد غیر منقولہ ہے اور وہ بھی جائیداد میں شامل ہو گا ۔ یہ میری رائے ہی نہیں بلکہ پریمیک گونسل کے فیصلوں اور سپریم کورٹ کی روشنگری (Rulings) کے لحاظ سے بھی معاوضہ دینا پڑیگا ۔

میں نے جو چار قسم کے قابض بتلاتے ہیں ان میں ایک قدیم قابض ہے ۔ اس سے بغیر کسی پریمیک کے لئے کوئی حق نام پٹہ کرنے کے احکام ہم نے رکھے ہیں ۔ البتہ باقی تین سے اگر انہیں پٹہ دیا جائیگا تو معاوضہ لینے کا حکم دیا گیا ہے ۔ اسی سے انعامدار کو یہ قبضہ معاوضہ دلایا جائیگا محفوظ قولدار یا عارضی قولدار ہونے کی وجہ سے زیادہ معاوضہ انعامدار کو مل سکتا ہے ۔ اصول پر یہ کہ جہاں اراضی پر قابض کو زیادہ

حق تھا اوس سے وہاں کم معاوضہ اور جہاں زیادہ حق نہ تھا اوس سے کم معاوضہ لیا جائے۔ تسلیم کیا گیا۔ ٹیننسی ایکٹ کے لحاظ سے جو حقوق قوامداروں کو آئندہ ملنے والے تھے انکو فوری دلانے کے لئے ہم نے یہ قاعداً وضع کیا ہے۔ اس سے ایک طرف تو آئندہ مقدمہ بازی اور عہدہداروں کے پاس پیروی کرنے کی ضرورت نہیں رہتی اور دوسری طرف انعامداروں کے زیادہ استفادہ کی صورت میں زیادہ۔ کم استفادہ کرنے کی صورت میں کم اور جہاں استفادہ نہیں ہوتا وہاں بہت ہی کم معاوضہ مقرر کرنے سے انعامدار اور قوامداروں میں مساوات قائم ہو گی۔ اس طرح جو معاوضہ مشخص ہوگا وہ صحیح اصول پر منی قرار پاتا ہے۔ اگر ہم ایسا معاوضہ مقرر نہیں کریں گے تو آئندہ چلکر عدالتون میں یہ قانون باقی نہیں رہ سکے گا اور منسوخ ہو جائیگا۔

اب اس میں مالگزاری کے لحاظ سے معاوضہ دینا چاہئے با منافعہ کے لحاظ سے معاوضہ دینا چاہئے میں اسکا جواب دینے کی ضرورت نہیں سمجھتا۔ کل جب ترمیات پیش ہونگی اس وقت غور کیا جائیگا۔ اگر مالگزاری کی پیس پر معاوضہ دینا قرار دیا جائے اور وہ زیادہ بہتر معلوم ہوتا میں اسکو قبول کروں گا۔ لیکن آپکو یہ بتلانا یڑیگا کہ کونسی صورت قولداد کے لئے بہتر ہو سکتی ہے۔ اگر آپ یہ بتلائیں تو میں اسکو بلا پس و پیش تسلیم کروں گا۔

شری عبد الرحمن :- اس نوبت پر آپ اپنی رائے بتلائیجیں۔

شری کے - وی - رنگا ریڈی :- حب آپ ترمیات پیش کریں گے تو میں اپنی رائے بتلاؤں گا۔ اپنی رائے سے تو میں نے قانون مرتب کیا ہے۔ اگر آپ کے مباحثت کے بعد مجھے اپنی رائے میں ترمیم کی ضرورت محسوس ہوتا میں ضرور اسکو تسلیم کروں گا۔

بعض صاحبوں نے فرمایا کہ جب انعامداروں کو معاوضہ دینے ہی کا سوال ہے تو کم از کم یہ ہونا چاہئے کہ بڑے انعامداروں کو کم معاوضہ اور چھوٹے انعامداروں کو زیادہ معاوضہ دیا جائے۔ اسکو بھی میں دستور پر چھوڑتا ہوں۔ اگر یہ جائز ہوتا میں اسکو تسلیم کروں گا لیکن میری رائے ہے کہ ایک ایکر والے کو ۰۔ ۰ روپیہ معاوضہ دیتے ہیں تو ایک سو ایکر والے کو پانچ ہزار دینا ضروری ہوگا۔ کیونکہ معاوضہ جائیاد کا ہوتا ہے مالک جائیاد کا نہیں ہوتا۔ یہ بڑے پیٹ والے ہیں یا بڑے دولتمد ہیں یا جھوپڑی میں رہتے ہیں یہ نہیں دیکھا جائیگا بلکہ جائیاد دیکھی جائیگی۔ یہ میری ناقص رائے ہے۔ اگر آپ اپنی قابلیت کے لحاظ سے یہ بتلائیں گے کہ بڑی جائیاد والوں کو کم معاوضہ دینا چاہئے اور غریب آدمی کی جائیاد کے لئے زیادہ دینا چاہیے تو یہ اور بات ہے ۔ ۔ ۔

شری گوبال راؤ (پاکھاں) :- آپکے کہنے کے مطابق جاگیر ایالیشن کے وقت کیا ہی نہیں ہوا۔ بڑے جاگیرداروں کو کم معاوضہ ملا۔

شری کے - وی - رنگا ریڈی :- غلط فہمی ہو رہی ہے۔ بڑے جاگیرداروں میں اور چھوٹے جاگیرداروں میں معاوضہ دینے کے لئے ہم نے کوئی تفریق نہیں کی۔ البتہ

بائیگھوں کو ہم نے کم معاوضہ دیا ہے۔ اور یہ اس وجہ سے کیا گیا کہ اُنکے ذمہ کچھ سرکاری خدمات کرنا یعنی فوج وغیرہ رکھنا ضروری تھا۔ سرکار کی خدمت کے عوام ۲۔ فیصلہ مزید وضعات کیا گیا۔ جملہ جاگیرداروں سے ۶۔ فصلہ وضع کرنے کے بعد ۷۔ فیصلہ دبنے کے نئے ہم نے رکھا ہے۔ البتہ انکی ادائی کی مدتون میں فرق ہے۔ یہ کم و بیش نیا ہے۔ یہ نہیں ہے کہ بڑی جائیداد کے مالک اور جھوٹی جائیداد کے مالک میں متیاز کیا گا۔ ۸۔ البتہ انکی اقساط میں فرق ہے۔ کسی کے قساط ۱۔ سال میں کسی کے ۵۔ سال میں اور کسی کے ۲۰۔ سال میں دیرہ ہیں۔ حالات کے لحاظ سے جتنی مدت میں اپنے پیر یا کھڑے ہو کر زندگی بسر کرنے کے قابل ہوسکتے ہیں اس کے لحاظ کیا گیا ہے۔

شروع ادھو راؤ پیلیل:- اگر اور وقت کی ضرورت ہے تو ہم کان تازہ دم آکر منسٹر صاحب کی تقریر سننا چاہتے ہیں۔

شیری گوبال راؤ:- کل تک ملتی کرنا مناسب ہو گا کیونکہ اگر پہلی تقریر میں شہابات ختم ہو جائیں تو پھر امنڈمنٹس پیش نہ ہوں گے۔

شیری گروا ریڈی:- کم سے کم اندازہ تو ہو کہ کتنا منسٹر صاحب وقت اور لین گے۔ شری کے۔ وی رنگا ریڈی:- میں یہ مناسب سمجھتا ہوں کہ کل رکھنے کے بجائے آج ہی اور ۱۵۔ ۰۰ منٹ یٹھکر اس کو ختم کر دیا جائے۔

The House then adjourned till Half-Past Two of the Clock on Thursday
the 26th August 1954.

— — —

